कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

अहं रामः अस्मि - प्रबोधन माला विशेषांक

रामराज्य

जो अपना पुरुषार्थ दिखाएं ।
आत्म-बली हो बल दर्शाएं।।
राम भरोसे काम न छोड़ें ।
राम गुणों को जो अपनाएं।।

जय हनुमान राम गुण सागर ।
प्राण जाए पर वचन न जाए ।।
ऐसे राम भक्त जो भी हो ।
रामलला को वही सुहाए ।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 32, अंक 2
जुलाई-सितंबर 2021 (विक्रम संवत् 2078)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद
-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी
–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- रामादिवत्वर्तितव्यम् न तु … 2
- हार्दिक कृतज्ञता 3
- पूज्य गोविंददेव गिरि जी … 4
- वात्सल्य मूर्ति दीदी माँ … 12
- मैं का समाप्त होना ही रामत्व … 19
- अमृत वचन 24
- मिट गए अगणित लघु दीप हमारे 25
- ग्रामसभा के जरिए होगा वनों … 29
- निष्ठा और समर्पण के प्रतिमान … 30
- कोलकाता-हावड़ा महानगर की … 31
- अखिल भारतीय महिला प्रमुख … 34
- अनुकरणीय 34
- स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर… 35
- बोध कथा… वाणी का संयम 36
- कविता … राम-तत्व तो बोधगम्य है 36

रामादिवत्वर्तितव्यम् न तु रावणादिवत्

शस्य श्यामला बंगभूमि भारत के सांस्कृतिक पुनरुत्थान का केंद्र थी। राजा राममोहन राय, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद एवं ईश्वरचंद्र विद्यासागर से लेकर श्यामाप्रसाद मुखर्जी तक ने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में राष्ट्र की अगुवाई की है। कोलकाता देश की राजधानी हुआ करती थी। हम देख पा रहे हैं कि उसी बंगाल को आज ग्रहण लग गया है। चतुर्दिक षड्यंत्रों से घिरा बंगाल विभिन्न क्षेत्रों में अपने अस्तित्व की आखिरी लड़ाई लड़ रहा है। बंगाल की उदात्त संस्कृति प्रदूषित ही नहीं खतरे में भी है। स्वार्थ सिद्धि की सतत् प्रतिस्पर्धा चल रही है। सुधी जनों में गहन नैराश्य, कुंठा, अवसाद और किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति है। इन विषम परिस्थितियों में बंगालवासियों का नैतिक कर्तव्य है कि समाज को इन विद्रूपताओं एवं विसंगतियों से बचाया जाए ताकि यहां की संस्कृति अक्षुण्ण रहे। हमारा सही दिशाबोध एवं सही दिशा में प्रस्थान ही बंगाल को वर्तमान चक्रव्यूह से निकाल सकता है। इस संकट-संकुल समय में प्रभु श्री राम का जीवन एवं चरित्र और भी प्रासंगिक हो गया है क्योंकि राम-तत्व भारत का सांस्कृतिक अधिष्ठान हैं और श्रीराम भारत की सांस्कृतिक पहचान। पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षिण बंग के तत्वावधान में कोलकाता महानगर की 34 सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, सेवाभावी संस्थाओं ने मिलकर स्वनामधन्य विभूतियों–पूज्यपाद गोविंद गिरि जी महाराज, वात्सल्य मूर्ति दीदी मां साध्वी ऋतंभरा जी एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह आदरणीय डॉ. कृष्ण गोपाल जी के श्रीमुख से त्रि-दिवसीय प्रबोधन श्रृंखला **अहम् रामः अस्मि- मैं राम हूं** का भव्य आयोजन किया ताकि निराशा एवं नकारात्मकता के माहौल में पुनः आशा का संचार हो सके। श्री राम का चरित्र एक ऐसा आदर्श है जो हर कालखंड में व्यावहारिक लगता है। राम का स्मरण भीषण विपत्तियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हमें अशांत नहीं होने देता है। तीनों विभूतियों ने अपनी चिर-परिचित वक्तृत्व शैली में सकारात्मक चिंतन, बेहतर जीवन के लिए पुरुषार्थ एवं अन्याय का प्रतिकार कर धर्म मार्ग पर चलने की प्रेरणा देकर नवीन ऊर्जा का संचार किया। हमारे भीतर का राम भाव जागेगा तभी अन्याय एवं समस्या रूपी रावण का प्रतिकार हो सकेगा। विडम्बना है कि सब उल्टी चाल चल रहे है। इसलिए हमें अपनी चाल बदलनी होगी, अपने चिंतन को बदलना होगा, अपनी सोच को बदलना होगा; तभी हम अपने जीवन का कल्याण कर सकेंगे। एक बात सदैव ध्यान रखनी होगी कि आदर्शों को पूजने से हमारा कल्याण नहीं होगा आदर्शों के रास्ते पर चलने से हमारा कल्याण होगा। प्रबोधन माला के तीनों वक्तव्यों को प्रकृत रूप देने में कल्याण भारती की सह-संपादिका एवं अलीपुर समिति की सक्रिय, संवेदनशील, विदुषी कार्यकर्ता डॉ. रंजना त्रिपाठी ने निष्ठापूर्ण श्रम किया है, एतदर्थ उनका हृदय से धन्यवाद एवं आभार। आशा है पाठकगण इन उद्बोधनों को पढ़कर अपने जीवन में सार्थक परिवर्तन करते हुए जीवन जीने का नया अंदाज सीखेंगे। हमारा प्राणप्रिय देश भारत विश्व गुरु की प्रतिष्ठा अर्जित कर अपने गौरव को पुनः प्राप्त करें, यह हर भारतवासी का स्वप्न है। हमें विश्वास है कि ये उद्बोधन हमें अनवरत अनुप्रेरित तो करेंगे ही बल्कि आगे बढ़ने का रास्ता दिखाने में भी मददगार साबित होंगे। इति शुभम्।

- स्नेहलता बैद

हार्दिक कृतज्ञता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम, दक्षिण बंग द्वारा आयोजित अहं रामः अस्मि-मैं राम हूं प्रबोधनमाला के सफल आयोजन में कोलकाता महानगर की निम्न सामाजिक, सांस्कृतिक,साहित्यिक एवं सेवाभावी संस्थाओं ने अपनी श्रम बूंदों से अभि सिंचित कर सहभागिता अर्पित की-

गौसेवा परिवार

राम शरद कोठारी स्मृति संघ

श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय

वनबंधु परिषद

साल्टलेक सांस्कृतिक संसद

पूर्वांचल नागरिक समिति

अखिल भारतीय गायत्री परिवार, कोलकाता

कलकत्ता पिंजरापोल सोसायटी

श्री हरि सत्संग समिति

पूर्व कलकत्ता नागरिक परिषद

बांगुर एवेन्यु संघ

सालासर भक्त वृंद

बड़ाबाजार लाइब्रेरी

विप्र फाउंडेशन, ज़ोन 7

राजस्थान परिषद

श्री बड़ाबाजार लोहापट्टी सेवा समिति

हावड़ा वेलफेयर ट्रस्ट

श्री राम सेवा समिति ट्रस्ट, हावड़ा

श्री श्री सिद्धविनायक भक्त मंडल

खण्डल विप्र सभा

राष्ट्रीय ब्राह्मण महासंघ

लक्ष्मणग़ढ नागरिक परिषद

रतनग़ढ नागरिक परिषद

श्री अग्रसेन स्मृति भवन

श्री बालाजी जागरण मंडल

श्री श्याम प्रेम मंडल

सांभर क्लब

नोखा नागरिक संघ

भारतीय संस्कृति संवर्द्धन समिति

परचम

सभी संस्थाओं एवं कार्यकर्ताओं के प्रति पूर्वांचल कल्याण आश्रम परिवार आभार एवं शुभाशंसा ज्ञापित करता है।

पूज्य गोविंददेव गिरि जी महाराज के श्रीमुख से निसृत प्रेरणा पाथेय

यू-ट्यूब प्रतिलेखन
डॉ. रंजना त्रिपाठी,
अलीपुर महिला समिति

अहं रामः अस्मि.....मैं राम हूँ प्रबोधनमाला के पहले दिन पुरुषार्थ के इतिहास में महान पुरुषार्थी व्यक्तित्व के उदाहरणस्वरूप,अपनी सुख-सुविधाओं को गौण मानते हुए जनकल्याण के लिए जीवन जीने वाले पूज्यपाद गोविंद देव जी ने अपने श्रीमुख से राम-तत्व से सबका आभामय परिचय कराया। आरंभ में ही उन्होंने ओजस्वी वाणी से

वनवासी कल्याण आश्रम, दक्षिण बंग का अभिनंदन किया। आभार प्रदर्शन किया कि भगवान श्री राम के नाम से मंडित अहं राम:अस्मि–मैं राम हूँ, इस अत्यंत यथार्थ और महत्वपूर्ण उपक्रम में उन्हें सहभागिता का अवसर प्राप्त हुआ है। आपने कहा कि अनेक संस्थाएं इस उपक्रम के साथ जुड़ी हैं। इन सभी संस्थाओं का भी वे अभिनंदन करते हैं क्योंकि उन्होंने इस उपक्रम से जुड़कर अपने कर्तव्य का निर्वहन किया है।

अपनी धाराप्रवाह चिरपरिचित मंगलकारी प्रवचन शैली में गोविंददेव गिरि जी ने कहा कि वनवासी कल्याण आश्रम जिस मंगल उद्देश्य से स्थापित हुआ और जिस प्रकार का महान कार्य करता आया है, इससे हम सभी परिचित है। वस्तुत: वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना किसने की ये प्रश्न मुझे पूछा जाए तो मैं यही कहूंगा कि भगवान श्री राम ने अपना पूरा जीवन जिनकी सेवा में व्यतीत किया उन ऋषियों के द्वारा वनवासी कल्याण आश्रम की स्थापना हुई है। और वनवासियों की रक्षा करने वाले उन ऋषियों के लिए श्री भगवान अपना घर छोड़कर चले। सुविधाओं का त्याग किया। उस

अत्यंत प्राचीन कार्य को पुन: इस देश में आप लोगों ने पुनर्जीवित किया और हमारे देश के वनवासी भाई-बहनों की सेवा के लिए आप लोगों ने अपने जीवन में यथाशक्ति सेवा प्रदान करने का अत्यंत मंगलमय कार्य किया। आप सभी का अभिनंदन।

भगवान श्री राम हम सभी के लिए आराध्य देव तो हैं ही लेकिन भगवान श्री राम की विशेषता यह है कि उनके अवतार के बारे में मुक्त कंठ से एक बात सभी आचार्यों, सभी संतों के द्वारा कही गई और वह यह बात है कि धर्म को जानना हो तो और कुछ करने की आवश्यकता नहीं राम जैसे बनने का प्रयास करना चाहिए, यही धर्म है।

भगवान श्री राम धर्म की अर्थात् हमारे सांस्कृतिक समस्त जीवन मूल्यों की साकार प्रतिमा है। इसीलिए सभी महापुरुषों ने स्पष्ट कहा कि धर्म को जानने के लिए और कुछ करने की आवश्यकता नहीं। राम को जानो तो धर्म को अपने आप जान जायेंगे। राम जैसा बनने का प्रयास करो तो अपने आप आपका जीवन धर्म में ढल जायेगा। अत: मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम सहस्राब्दियों से हमारे आदर्श रहे है और उनके मार्ग पर चलने का प्रयास करना ही हमारा प्रथम कर्तव्य है।

अनुकरणीय, आदरणीय, पूजनीय, प्रात: स्मरणीय अनेक चरित्र है और सभी अपने–अपने स्थान पर अत्यंत श्रेष्ठ है, किंतु जिनका अनुसरण करने का प्रयास किया जाए उन भगवान श्री राम के बारे में आज कुछ चिंतन मुझे आप लोगों के समक्ष करना है। मैं इससे अभिभूत हूँ और इस बात को लेकर भी बहुत अभिभूत हूँ कि भगवान श्री राम का ये आदर्श जिन्होंने अपने जीवन में उतार करके दिखाया है, ऐसे इस देश के उत्थान के लिए अपने संपूर्ण परिवार का होम करने वाले स्वातंत्र्य वीर सावरकरजी की आज जयंती है। सावरकरजी ने इस राष्ट्र के लिए जो किया वह हम सब लोगों को ज्ञात है। उन्होंने हमारे सामने भगवान श्रीराम के रूप में छत्रपति शिवाजी महाराज को रखा। इस देश को जगाना होगा तो श्रीराम के मार्ग पर चलना होगा। इस देश और विश्व का कल्याण करना है तो छत्रपति शिवाजी महाराज के मार्ग पर चलना होगा। सावरकर जी ने शिवाजी महाराज का आदर्श सामने रखा। बङ्ग प्रांत के हैं आप लोग। आपलोगों को मैं बतलाना चाहता हूँ कि बङ्गभूमि के लाल नेताजी सुभाषचंद्र बोस जो स्वयं इस राष्ट्र के अत्यंत महान गौरव है, वे जब सावरकर जी से मिलने आए तब सावरकर जी ने कहा- **आप छोटे-मोटे काम मत कीजिए। आपको शिवा जी का आदर्श अपने सामने रखकर देश के बाहर जाकर भारत की राष्ट्रीय संस्थापना कर देनी चाहिए।** शिवाजी महाराज का आदर्श अपने सामने रखते हुए सावरकर जी ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को यह मंत्र दिया और वही सफल हुआ।

ध्यान रखना चाहिए कि यह वही मंत्र है जिस मंत्र ने इस देश को मुक्त किया है और उन्होंने जिस छत्रपति शिवाजी महाराज को आदर्श के रूप में अपने सामने रखा उन्हीं छत्रपति शिवाजी महाराज ने भगवान श्री राम को अपने आदर्श के रूप में अपने सामने रखा।

इसीलिए तो परंपरा से चलती आई रामत्व की धारा आज हमारे बीच जगाने की आवश्यकता है, क्योंकि जब जब राष्ट्र संकट में होता है, जब-जब समाज पर आक्रमण होता है, जब-जब मानवता बलिदान चाहती है, पुरुषार्थ को ललकारती है तब-तब इस प्रकार की भूमिकाएं आवश्यक होती है। मित्रों! उस समय को याद करो जब छत्रपति शिवाजी महाराज के समय जो अंधकार था, भगवान श्रीराम

के समय भी अंधकार था लेकिन उस अंधकार में भगवान श्रीराम ने अपने पुरुषार्थ से एक दीपक जलाया और उस दीपक ने अत्यंत महान उदाहरण स्थापित किया और धर्म की संस्थापना होकर रही। छत्रपति शिवाजी महाराज के समय में भी ऐसा ही घोर अंधकार था। उस समय छत्रपति महाराज के गुरुदेव, भारत के महान संत समर्थगुरु रामदास जी ने एक ही नारा दिया था। वह नारा था **जय जय रघुवीर समर्थ।** उस समय सभी अत्यंत पराभूतता का अनुभव कर रहे थे, सब लोग डरे, सहमे हुए थे। कब कहाँ से आक्रमण होगा और कब हमारा सब कुछ लुट जाएगा, ऐसे भय की छाया में सब लोग जी रहे थे। उन्होंने कितना महान मंत्र लोगों को दिया जय-जय रघुबीर समर्थ। हमारे सामने आदर्श के रूप में भगवान श्रीराम को और अपने जीवन के आदर्श के रूप में स्वयं हनुमानजी महाराज को रक्खा और राष्ट्र का पूरा उत्थान हुआ। इस प्रकार का कोई न कोई मंत्र पीढ़ी दर पीढ़ी आवश्यक होता है। छत्रपति **शिवाजी महाराज की जय**, यह हमारी सेना का मंत्र हो गया, यह क्रान्तिकारियों का मंत्र हो गया। आपको पता है भगतसिंह जैसे महान वीरों का मंत्र हो गया था **इंकलाब जिंदाबाद**। इस नारे ने नए लोगों के भीतर पुरुषार्थ जागृत किया। इंकलाब जिंदाबाद जैसा ही एक नारा इस देश में और चला **वंदेमातरम्** और यह नारा बङ्गभूमि के पुत्र बंकिम बाबू ने दिया। वंदेमातरम्, वंदेमातरम् को अपने कंठ से गाते हुए, अपने कंठ से उच्चारित करते हुए कितनी-कितनी यातनाएं सह गए हमारे क्रांतिकारी वीर। असह्य यातनाएं सहने के बावजूद हमारे क्रांतिकारियों ने वंदेमातरम् कहना नहीं छोड़ा, क्योंकि वंदेमातरम् के उच्चारण मात्र से शक्ति का संचार होता था। वंदेमातरम् के माध्यम से उनके भीतर ऊर्जा का जागरण होता था। **भारत माता की जय** भी इसी प्रकार का नारा रहा। वर्तमान में हम लोगों ने सर्वत्र आसेतु हिमाचल एक ही नारा सुना मित्रों और वो नारा है **जय श्रीराम**।

रावण ने सुना कि सागर के ऊपर सेतु बन गया है। सौ योजन के सागर के ऊपर सेतु बनेगा ऐसा कभी रावण को लगा नहीं था। यह पहला प्रसंग था जब रावण घबराया, आशंकित हुआ। **सागरे सेतु बंधनम्**...मैं तो भरोसा नहीं कर सकता। मूल बात ये है कि पत्थरों का सेतु तो भगवान श्रीराम ने निर्माण किया था लेकिन सबसे बड़ी बात ये थी कि भगवती जानकी की मुक्ति के लिए जो संघर्ष आरंभ हुआ उस संघर्ष में मदद करने के लिए सामने वाली जो सेना खड़ी थी, उस सेना में अयोध्या का कोई भी नहीं था। अयोध्या से केवल भगवान श्रीराम, लक्ष्मण दो ही थे। बाकी सब लोग भगवान के द्वारा संगठित किए हुए लोग थे। प्रभु ने क्षत्रियों के साथ भीलों का, भीलों के साथ ऋषियों का, ऋषियों के साथ बंदरों का, बंदरों के साथ हृदयों का जो सेतु निर्माण किया है, जिसको आपकी भाषा में संगठन कहते हैं; वह सेतु बंधन भगवान श्रीराम के जीवन की सबसे महान लीला है। इसी संगठन के बल पर रावण मारा जा सकता है, प्रभु ने पहले ही निश्चित कर लिया था और यही करते हुए श्री भगवान 14 वर्षों तक घूमे थे। ध्यातव्य है कि लोग सिंहासनारुढ़ राजा राम को कम याद करते हैं, उसके पहले 14 वर्षों में उन्होंने जो संगठन का काम किया है उसके लिए अधिक याद करते हैं, क्योंकि 14 वर्षों में भगवान श्रीराम के जीवन से वो सारे गुण निखरकर आ गए, जिन गुणों के कारण **नर करनी करे तो नारायण हो जाए**, यह बात हम लोगों के ध्यान में आती है। अहं राम: अस्मि इस प्रकार का भाव अपने भीतर

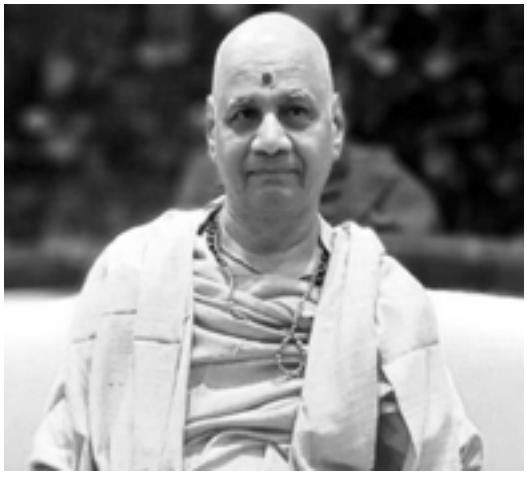

वास्तव में प्रामाणिकता के साथ जागृत करना हो तो मित्रों समाज का संगठन कीजिए, सबको जोड़िए, समरसता का गान गाइए। झुग्गी-झोपड़ियों में जाइए। संप्रदायों से अतीत होकर, सांप्रदायिकता से अतीत होकर, जातियों से, प्रदेशों से, भाषाओं से अतीत होकर भारत माता की सेवा करने के लिए एक संस्था के सेतु का जब हम निर्माण करेंगे तब जाकर वर्तमान ताड़का मारी जाएगी। तब आज का रावण समाप्त होगा, उसके बिना नहीं होगा। और विश्वास कीजिएगा ये सब हो सकता है, पर इसके लिए आपके अंदर भी विश्वास होना चाहिए। भगवान श्री राम के जीवन की सबसे बडी विशेषता है उनका आत्मविश्वास। कल्पना कीजिएगा कि भगवती सीता का अपहरण होने के पश्चात्, यदि यह विपत्ति हम पर आती, तो हम अयोध्या समाचार भेजने के बाद कहते कि भरत कुछ भी तो करो तुम्हारी भाभी का अपहरण हो गया है। भगवान श्रीराम ने कुछ नहीं किया। अयोध्या के लोगों को भनक नहीं लगने दी। ''अरे मेरे कार्यकर्ता मैं निर्माण करूँगा, मेरा जन-संकलन मैं करूँगा।'' इस विश्वास के साथ चल पड़े भगवान श्री राम।

विजेतव्या लङ्का चरणतरणीयो जलनिधिः
विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च कपयः।
तथाप्येको रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं
क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे।।

तुम्हारे भीतर रामत्व का जागरण करना हो तो सबसे पहले आपको आत्मनिर्भर बनना होगा। सावरकर जी ने कहा था ....मुझे तो देश को जगाना है, मुझे तो देश सेवा करनी है। इन पापियों का नाश करना है। आप साथ में आएँगे तो आपका स्वागत है, नहीं आएँगे तो आपको नमस्कार। बीच में आएँगे तो आपको भी कुचलकर हम मार्ग बनाकर चलने वाले है। मुझे तो इस देश में राम की संस्कृति को बचाना है। वेदों के गान को बचाना है। इस देश में मंदिरों को बचाना है। गोमाताओं को बचाना है। इस देश की सतियों की लज्जा को बचाना है। इस देश में मतांतरण को रोकना है और भारत को भारत के रूप में रखना है। यह भूमिका हमलोगों को धारण करनी होगी। उसके बिना ये देश बचने वाला नहीं है, उस समय का रावण 10 मुखों वाला था, ऐसा सुनते हैं हम लोग। आज की समस्याओं के भी अनेक मुख है। ध्यान रखना, कभी ये समस्याएं हमारे सामने सांप्रदायिकता, कभी साम्यवाद के रूप में आती हैं। कभी ये समस्याएँ जिहाद के रूप में आती है तो कभी यह समस्या भिन्न-भिन्न चर्चों के द्वारा किए गए अनेक घिनौने मामलों के रूप में आती हैं। ये सभी समस्याएं इस देश को तोड़ने वाली है। उत्पात करने वाले हमारे ही देश में जन्मे हुए, इसी देश की भूमि का अन्न खाने वाले और जल पीनेवाले, लेकिन जिनके ईमान विदेशी लोगों को बेचे हुए हैं, ऐसे कितने ही लेखक इस देश में है, ऐसा पापी मीडिया इस देश में है, ऐसे कितने ही भारत तेरे

टुकड़े होंगे कहने वाले इस देश में है। आज इस देश की अस्मिता को बेचने वालों की कमी नहीं है। ये सारी समस्याएं राम के सामने भी खड़ी हुई। किंतु उन्होंने हार नहीं मानी। भगवान श्रीराम ने जिस शैली से काम किया उस शैली से हम लोगों को जोड़ते जाते हैं। जातियों और संप्रदायों से अतीत होकर भारतमाता को आराध्य मानकर चलते हैं तो मित्रों ये पापी रावण भी खत्म होंगे। यह निश्चित रूप से हम लोगों को जानना चाहिए कि भारतमाता मेरी माता है। देश के किसी भी कोने में निर्माण होने वाली प्रत्येक समस्या मेरी समस्या है। केवल वहाँ की समस्या नहीं है। केरल में मोपलाओं ने बहुत बड़ा अत्याचार हिन्दू समाज के ऊपर किया था। सावरकर जी ने उसके ऊपर एक पुस्तक लिखी है। अत्यंत घिनौने अत्याचार के बावजूद भी लोगों को लगा कि मुझे क्या, ये तो केरल के ऊपर हो रहा है। उत्तरप्रदेश वाला सुखी है, महाराष्ट्र वाला सुखी है। जिस प्रकार ठोकर पैर को लगती है और हाथ उसकी सेवा के लिए दौड़ते हैं। उसी प्रकार इस देश के किसी भी कोने में आपत्ति आएगी,धर्म के ऊपर, राष्ट्र के ऊपर, गोमाता के ऊपर, मंदिरों के ऊपर तो वो आपत्ति मुझे मेरी लगनी चाहिए। केरल में मोपलाओं के द्वारा अत्याचार के समय भी सभी लोग सोए नहीं थे लेकिन जो जगे थे वो भी संगठित नहीं थे।

आपत्ति केवल केरल के ऊपर ही नहीं आई बल्कि कश्मीर के ऊपर भी आई। वहाँ से पंडितों को निकाला गया। क्या वह केवल कश्मीर के लोगों की आपत्ति थी? ये आपत्ति पूरे देश की आपत्ति थी। महर्षि रमण कहा करते थे, ''मैं भारत हूँ। कहीं पर भी होने वाला आघात मेरे सारे शरीर को झकझोर देता है।'' इसलिए कश्मीर की आपत्ति केवल कश्मीरी लोगों की नहीं, वो पूरे भारत की आपत्ति है क्योंकि भारतमाता का वो शीर्ष है। सिंधु का हमसे दूर हो जाना क्या यह कोई सामान्य बात थी? मुझे तो रोज़ दु:ख होता है? गंगा-सिंधु–कावेरी हम कहते रहे हैं किंतु भारत के नक्शे में सिंधु कहाँ है, यह प्रश्न पूछा जाना चाहिए। मुझे याद आता है वह प्रसंग जब अटल जी हमारे भारतमाता मंदिर में आए थे और हमारे पूज्य स्वामी जी महाराज ने मुझे बोलने के लिए कहा। मैंने अटलजी से उस समय कहा कि गंगा जी के तट पर आकर आप गंगा मंदिर का उद्घाटन क्या करते है? हम लोगों को चाहिए कि ऐसा उद्घाटन हम सिंधु तट पर जाकर करें। स्वामीजी और अटल जी दोनों अभिभूत हो गए। सिंधु को मुक्त करना हमारे सामने क्यों लक्ष्य नहीं है? हमारा बङ्ग कटा हुआ है? दुख नहीं होता हम लोगों को। अरे यह वह बङ्ग भूमि, जो चैतन्य महाप्रभु की भूमि है, जो गौरांग महाप्रभु की भूमि है, ठाकुर रामकृष्ण देव की भूमि है, जो बंकिम बाबू की भूमि है, जो रवि बाबू की भूमि है, चितरंजन दास की भूमि है, स्वामी विवेकानंद को जन्म देने वाली भूमि है, उस बंगाल में जो अत्याचार होते हैं, वह क्या केवल बंगीय लोगों पर ही हो रहे हैं? जिनको ये लगता हो कि मुझमें राम है, ऐसे लोगों को लगना चाहिए कि पूरा देश मेरा है। इसके लिए आसेतु हिमाचल को जगना चाहिए। यदि इस प्रकार की आपदा आई है तो इस आपदा से बङ्ग प्रदेश को बाहर लाने के लिए जो कुछ आवश्यकता होगी वह करने के लिए सिद्ध होकर वहाँ जाना चाहिए। ये सिद्धमंत्र जिनके अंदर जगता वह यह कह सकता है कि अहं राम: अस्मि ...। इस पुरुषार्थ का जागरण हमारे भीतर करना, यही सच्चा रामत्व है। एक बात बताना बहुत आवश्यक है। भगवान श्री राम

दयानिधान रहे, करुणानिधान रहे, ये सबको पता है। रामकथा में मैं स्थान–स्थान पर ऐसा कहता रहा हूं किंतु आज आवश्यकता उस राम की है, जिसने अपना कोदंड कभी छोड़ा नहीं। भगवान श्री राम की ये विशेषता सबके ध्यान में रहनी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर भगवान ने अयोध्या जी का त्याग किया, माता–पिता का त्याग किया। वनवास से लौटने के बाद आवश्यकता पड़ने पर भगवती जानकी का भी त्याग किया। बाल्मीकि रामायण के अंतिम सर्गों में हम देखते हैं कि उन्होंने लक्ष्मण का भी त्याग किया। किंतु भगवान श्री राम ने जिस वस्तु का त्याग कभी भी नहीं किया, वह है कोदंड। धनुष का त्याग भगवान ने कभी भी नहीं किया। और इसीलिए भगवद्गीता के विभूति योग में भगवान श्री राम को याद किया जाता है- **रामःशस्त्रभृर्तामहम्** शस्त्रधारियों में मैं राम हूं। श्री राम ने कभी कोदंड का त्याग नहीं किया। हम सभी ने कोदंड रहित राम को कभी नहीं देखा। राम का ऐसा कोई भी चित्र नहीं देखा जिसमें भगवान राम बिना कोदंड के हों। राम के चित्र की पहचान ही कोदंड है। कोदंड प्रतीक है प्रतिकार का। ऐसा समाज नहीं बनाना है, जहाँ सब कुछ चलता हो। ऐसे समाज का निर्माण होना चाहिए, जहाँ पर प्रतिकार की आवश्यकता है, वहाँ प्रतिकार कर सकें। भगवान श्री राम प्रतिकार के लिए खड़े हुए। कोदंड उनके प्रतिकार का प्रतीक है। उन्होंने अपने घर में प्रतिकार नहीं किया। केकैयी माता का प्रतिकार नहीं किया। पिता दशरथ का प्रतिकार नहीं किया। अपने लोगों का प्रतिकार नहीं किया। लेकिन पापियों का प्रतिकार किए बिना वे कभी भी नहीं रहे। इस बात को जानो कि अपना कौन है, पराया कौन है। इसको पहचानो। सारे लोगों के लिए मेरा आह्वान है कि इस बात की पहचान हो जानी चाहिए कि कौन है मेरा? जो भारतमाता की जय बिना हिचक के बोले वो मेरा है, जो वन्देमातरम् आदर के साथ गाएगा वो मेरा है। जो गोमाता की पूजा करेगा वो मेरा है। गोमाता के काटने की बात सुनना, जिसके लिए पाप है, वो मेरा है। जो आसेतु हिमाचल भारत माता को एक रूप में देखेगा वो मेरा है। भारत में जन्म लेने वाले सारे पंथ सम्प्रदायों को अपना मानने वाला मेरा है। जो कभी भी किसी के ऊपर अत्याचार नहीं करेगा, वो मेरा है। जो भारत के वनवासियों की सेवा के लिए अपने जीवन का परित्याग करेगा, वो मेरा है। आपदाएं सहकर भी विप्र वृन्दों की सेवा करने वाला मेरा है। इस राष्ट्रीय समाज को पहचानने की आवश्यकता है। इस संस्कृति को पहचानना है। ये जिनके जीवन में चरितार्थ होती है, वो कोई भी हो, मेरा है। बंधुओं! जो अपने हैं, उनके साथ खड़ा होना चाहिए। हिन्दुओं का दुर्भाग्य है कि वे आपस में लड़कर मरते हैं। आपसी मतभेदों से समाप्त होते हैं। इसका परिणाम है कि थोड़े से लोग आकर हम पर अत्याचार कर जाते हैं।

प्लासी की लड़ाई के उदाहरण को हम संदर्भ के लिए ले सकते हैं। उस समय के एक अंग्रेज़ ने लिखा है कि बहुत बड़ी संख्या में सैनिकों को बंदी बनाकर कलकत्ते की सड़क से ले जाया जा रहा था, उस दृश्य को देखने के लिए जितनी संख्या में लोग खड़े थे उतने लोग सिर्फ एक–एक पत्थर भी उठाकर मारते तो अंग्रेजों को यहाँ से उसी समय भागना पड़ता लेकिन सब देख रहे थे। सैनिक बेचारे गुलाम बनाके ले जाए जा रहे थे। हमने पहचाना नहीं कि अपना कौन है, पराया कौन है। इसलिए अपने-पराए की पहचान का विवेक करना सीखना होगा। संकल्प करना होगा कि जो अपने हैं, उनके साथ मैं कभी भी नहीं लडूँगा। भगवान श्रीराम ने अपने घर में यही

किया। स्वयं कष्टों को सहकर भी अपने घर को टूटने नहीं दिया, लेकिन चुन–चुन कर पापियों का वध किया। प्रतिकार करने का सामर्थ्य है तो सीमा पर जाकर करना चाहिए। पापियों के सामने करना चाहिए। जहाँ–जहाँ अत्याचार होता है, वहाँ किया जाना चाहिए। घरों में अत्याचार होते हैं, लूट–खसोट की जाती है, वहाँ जाकर प्रतिकार करने की आवश्यकता है। मैं राम हूँ, ऐसा कहते समय इस विवेक को जागृत करने की आवश्यकता है। प्रतिकार को सिद्ध करने की आवश्यकता है। लेकिन प्रतिकार वो कर सकता है, जिसमें स्वयं सामर्थ्य हो। वर्तमान युग में रहते हैं, तो वर्तमान युग का सबसे बड़ा सामर्थ्य है, संगठन। संख्याबल की भी आवश्यकता है। लोगों को जोड़ते चलना है। लोगों को अलग मत करो। अपना-पराया मत करो। सब मेरे हैं, ये भाव सबके भीतर जागृत होना चाहिए। जब हम सेवा के लिए निकले हों, तब हम कह सकते हैं कि मेरे भीतर राम है। भगवान श्री राम ने कोई भेदभाव नहीं किया। लोगों से प्रेम करना, भगवान श्री राम से सीखें। वनवासियों के पास जाकर भगवान श्रीराम ऐसे घुलमिल गए कि वह मिलन उनके जीवन की अमर गाथा बन गई। यह कार्य भगवान ने अपने प्रचार–प्रसार के लिए नहीं किया। मीडिया पर फोटो डालने के लिए नहीं किया। हम कितने वनवासियों की सेवा करते हैं, उन्हें अपना मानते हैं, कितने वनवासियों के लिए अपनी थैली खोलकर दान देते हैं, जो ऐसा करते हैं, वे ही रामत्व को धारण किए हुए हैं। कोई अपना समय देगा, कोई शारीरिक श्रम करेगा, किसी को दान देना पड़ेगा, धन देना पड़ेगा। यदि अपने भीतर के रामत्व को जगाना है, तो जो दुखी कार्यकर्ता हैं, उनके पास जाना पड़ेगा, जिनको पापियों ने मारा। जिन पर अत्याचार हुआ, जो बेसहारा हो गए वे इसलिए बेसहारा हो गए, क्योंकि उन्होंने सत्य का साथ देना चाहा। आज हमें जटायु को याद करने की आवश्यकता है। जटायु ने रावण का प्रतिकार किया। जटायु को पता था कि रावण के पास बाहुबल है, वह टिक नहीं पाएगा। यह जानते हुए भी जटायु ने रावण को निर्विघ्न जाने नहीं दिया। युद्ध किया। आखिर में गिर गया। धन्य हैं भगवान श्री राम। वे जटायु के पास पहुंचे। उसे वह संबल दिया, जो राम के पिता महाराज दशरथ को भी नहीं मिला। भगवान ने जटायु से कहा कि वे उसे जीवित कर सकते हैं, लेकिन जटायु ने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया। जटायु ने कहा कि उसके जैसा सौभाग्य बहुत कम लोगों को मिल पाता है कि वह साक्षात् प्रभु की गोद में प्राण त्यागे, उसे यह मिल रहा है। दशरथ जी की अन्त्येष्टि भगवान श्री राम ने नहीं की, लेकिन यह सौभाग्य जटायु को प्राप्त हुआ। जटायु रावण से युद्ध में सफल नहीं हुए थे। भगवान श्री राम यह नहीं देखते कि कौन सफल हुआ, कौन नहीं। वे देखते

हैं कि व्यक्ति ने अपना–अपना दायित्व निभाया है कि नहीं। जितनी शक्ति थी, उतना प्रतिकार किया या नहीं। बङ्ग–भूमि पर जिन लोगों ने पापियों का प्रतिकार किया वे निश्चय ही अभिनंदन के पात्र हैं। और हम लोग घर में बैठकर देखते रहते हैं। हम लोग उनकी सेवा करने के लिए आगे नहीं आते हैं। तो हमारे भीतर का राम कैसा?

ये कथन केवल बङ्गवासियों के लिए नहीं अपितु पूरे देश के लिए है। जिन लोगों पर अत्याचार हुए हैं उन्हें कौन संभालेगा? हमारे भीतर यह रामत्व जगना चाहिए। हमें दलित, शोषित, पीड़ित लोगों के पास जाना चाहिए, उनके आँसुओं को पोंछना चाहिए। उन्हें बोध कराना चाहिए कि वे अकेले नहीं हैं, बल्कि पूरा समाज उनके साथ हैं। भगवान श्रीराम एक–एक कार्यकर्त्ता का ध्यान रखते थे। अगर जटायु का ध्यान रखा तो छोटी सी गिलहरी का भी ध्यान रखा। उत्तमता तो यह कि हमें भारत माता के लिए काम करने वाले लोग अपने घर के लोगों से भी अधिक प्रिय लगे। हम सभी को अपने कार्यकर्त्ता प्रिय लगने चाहिए। देश के लिए मरने वाला, खटने वाला कार्यकर्ता जब हमे प्रिय लगने लगेगा, इस संदर्भ मे अपने विवेक को जागृत करना आज के विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता है। लंका विजय के पश्चात् भगवान राम लंका में प्रवेश नहीं करते। वे कहते हैं-

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

श्रीराम के इन्हीं भावों को काव्य रूप में कहा जा सकता है-

स्वर्णमयी लंका न मिले माँ, अवधपुरी की धूल मिले
सोने में कांटे चुभते हैं, मिट्टी में हैं फूल खिले।
अवधपुरी की धूल मिले...

मातृभूमि से प्रेम करना भगवान राम से सीखना चाहिए। अहं रामः अस्मि.... मेरे भीतर राम जागृत होना चाहिए। मातृभूमि से राम की तरह प्रेम करना चाहिए। मातृभूमि से प्रेम करने वाले अनेक स्वनामधन्य वीर पुरुषों को स्मरण कराते हुए पूज्य गोविंददेव गिरि जी ने कहा कि मेरे भीतर राम है, यह भाव जगाते हुए अपनी अखंड भारत माता से प्रेम करना चाहिए। हमारा भारत अखंड हो यही आकांक्षा रखनी चाहिए। आज जिस भी अवस्था में हमारा देश है उस अवस्था में राष्ट्रीयता का पोषण करने की आवश्यकता है। मातृभूमि की सेवा के लिए अपने जीवन को अर्पण करने की आवश्यकता है। अगर ये कार्य हम संगठित होकर करेंगे तो ये देश अखंड होकर रहेगा। इतिहास करवटें बदलता है, इसलिए ये होकर रहेगा। आज सामने आने वाली चुनौतियों का विचार अवश्य करना चाहिए। इन चुनौतियों को स्वीकार करते हुए समर्पण का जीवन जीते हुए, विजय की आकांक्षा लेकर यदि हम चलते हैं, तो हमारे पूर्वजों द्वारा देखे गए सपने साकार होंगे। और साकार हो भी रहे हैं। कश्मीर से धारा 370 हटने और राममंदिर निर्माण का सपना तो साकार हुआ ही। यह कार्यकर्ताओं के समर्पण का ही परिणाम है। हाथ में हाथ लेकर चलने का परिणाम है। चुनौतियों का सामना करते हुए हताहत कार्यकर्ताओं के बीच पहुँचकर उन्हें संभालना है। याद रखना होगा .....

ये उथल-पुथल, ये उत्ताल लहर पथ से न डिगाने पायेगी।
पतवार चलाते जायेंगे, मंजिल आयेगी-आयेगी।। ■

वात्सल्य मूर्ति दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा के श्रीमुख से प्राप्त प्रेरणा पाथेय

यू-ट्यूब प्रतिलेखन
डॉ. रंजना त्रिपाठी
अलीपुर महिला समिति

अहं रामः अस्मि– मैं राम हूँ त्रिदिवसीय अप्रतिम, अविस्मरणीय तथा महत्त्वपूर्ण प्रबोधनमाला के आभासी आयोजन में दिनांक 29 मई 2021 को विराट व्यक्तित्व और कमनीय कृतित्व की धनी, जन–जन की आस्था की केन्द्र, पूज्या दीदी माँ के श्रीमुख से प्रेरणा पाथेय प्राप्त हुआ।

आपने वनवासी कल्याण आश्रम और सभी सहयोगी संगठनों के कार्यकर्ता बन्धु भगिनी को सादर नमन करते हुए भगवान श्री राम के चरणों में बहुत सुंदर प्रार्थना निवेदित की।

हे दयामय आप ही संसार के आधार हो।
आप ही कर्तार हो, हम सबके पालनहार हो।
जन्मदाता आप ही, आप ही भगवान हो।
सर्वसुखदाता सखा भ्राता हो, तन–धन प्राण हो।

प्रभु श्री राम के चरणों में प्रार्थना निवेदित करते हुए दीदी माँ ने वनवासी कल्याण आश्रम के प्रत्येक भगिनी बन्धु, जिन्होंने प्रत्येक जन में श्री राम का दर्शन किया और अपने भीतर रामत्व को भरा, अपनी अयोध्या अपनी अवधपुरी श्री राम का धाम वनवासी क्षेत्र को बनाया, ऐसे सभी कार्यकर्ताओं को भी प्रणाम किया। उन्होंने कहा कि वे विचार कर रही थी कि कोई देश अपने पथ को प्रशस्त कैसे करता है? हमारे यहाँ कहा गया–**महाजनो येन गतः स पन्थः।** हम ऐसे महापुरुषों के चरणों का अनुगमन करें, जिन्होंने उदात्त भावों को जिया हो, जिसने देश धर्म को अपने रोम–रोम में भरा हो, जो जड़-जंगम के प्रति सदय हो, अनुरागी हो। हमारा वांग्मय, हमारी भारतीय मनीषा, हमारे संतों की उपदेशना, हमारे अवतारी महापुरुषों की लीलाओं का विपुल भंडार है। अगर आज भी हम इतिहास के सागर में डुबकी लगा लें तो उसमें से न जाने कितने हीरे–मोती प्राप्त हो जाएँगें। अयोजको के विचार को उत्तम बताते हुए कहा कि आज जो विचार किया गया कि इतनी आसुरी प्रवृत्तियाँ, इतने आसुरी प्रभाव, इतने घोर वितंडावाद उसके बीच में एक राम ..कैसे बात बनेगी? हम राम का आह्वान करेंगे क्या? हम कहेंगे क्या राम आप पुनः धरती पर अवतरित हों, हमारा उद्धार करने के लिए। ऐसी प्रार्थनाए करेंगे क्या? निश्चित रूप से

करेंगे। हम प्रार्थी हैं। प्रार्थना सहज रूप से हमारे चित्त में उठती है। व्याकुलता बढ़ती है तो ईश्वर की तरफ ही दृष्टि जाती है। मानवता जब असहाय हो जाती है तब हमें लगता है कि कोई दैवी प्रताप होगा, कोई दैविक भावना ऐसी प्रकट होगी, ऐसा व्यक्तित्व आएगा जो हमारा नेतृत्व करेगा। लेकिन आज का आयोजन बहुत ही सुंदर है- अहं रामः अस्मि ..मैं राम हूँ। जो राम का नाम लेकर, प्रभु का नाम लेकर मोक्ष–मुक्ति की कल्याण की कामना करते हैं, वो भी कोटि–कोटि जन हैं। उनकी भावनाओं से, उनकी आराधनाओं से, उनकी प्रार्थनाओं से भी पवित्रता व्याप्त होती है। ये कितना सुंदर भाव है कि हम राम का नाम ही न लें अपितु राम बनकर जिएँ। हम रामत्व को अपने भीतर भर लें, स्वयं राम हो जाए, स्वयं शौर्य बन जाएँ, स्वयं धैर्य बन जाएँ, स्वयं वीरता बन जाएँ, स्वयं करुणा का शिखर बन जाएँ, स्वयं सक्रियता का पर्याय बन जाएँ, स्वयं राष्ट्रीयता का पर्याय बन जाएँ, स्वयं यज्ञ होकर दीप्त बन जाएँ, स्वयं पूजित होकर धन्य हो जाएँ, स्वयं प्रार्थना होकर पवित्रता हो जाएँ, स्वयं तीर्थ होकर तीर्थत्व को धारण कर लें, स्वयं एक वंदना बन जाएँ, स्वयं उपनिषद का एक श्लोक बन जाएँ, स्वयं वेद की ऋचा हो जाएँ। हम स्वयं कृष्णत्व को अपने अंतस में समेट लें। सृष्टि के समस्त चराचर के शकुनियों, शिशुपालों दुर्योधनों और दुःशासनों की नाक में नकेल डाल देनी होगी। स्वयं को समझाना होगा कि हम स्वयं अपार संभावनाएँ लिए बैठें हैं। "मै नर हूँ किंतु नारायणत्व को अपने भीतर समेटे बैठा हूँ", इस भाव को जागृत करना होगा। आज की इस चिंतन की धारा को प्रवाहित करते हुए यह विचार करना होगा कि क्यों न हम स्वयं समाधान बनें, उसके लिए करना क्या होता है? जब हम किसी बड़े विराट महापुरुष के चिंतन में निमग्न हो जाते हैं तो वह हममें प्रकट हो जाता है। वनवासी कल्याण आश्रम की जो जड़ें हैं, जो उसका मूल है, उसके लिए बंगाल की तरफ हम देखते हैं, कोलकाता की धरती की ओर। वहाँ, जहाँ पर भगवती महाकाली अपनी लपलपाती जीभ लेकर समस्त अनिष्टों को समेट लेने के लिए आतुर हैं, वहाँ तत्पर हैं भगवती के चरणों में लोट–पोट होते परमहंस श्री रामकृष्ण। और जब वो माँ की आराधना में तन्मय हुए तो माँ के आवेश, माँ के आवेग की वो प्रतिमा जो उनके चित्त में प्रकट हुई, तो उनका अपना स्व स्त्री जैसा हो गया। उन्होंने उसको इतना जिया कि उनके भीतर वो भावनाएँ जागृत हुईं जो साकार होकर उनके शरीर पर लक्षण के रूप में प्रकट होने लगीं।

राम जी की आराधना हो और हम राम न बन पाएँ ऐसा कैसे हो सकता है? इसलिए जब हम प्रभु राम के इस चारु चरित्रों का चिंतन करते हैं तो धीरे–धीरे हमारे जीवन में मर्यादा, मर्यादित जीवन, हमारे जीवन में शौर्य, हमारे जीवन में समसामयिक चुनौतियों का स्वीकार करने का साहस आता है। दीदी माँ ने कहा कि जब उन्होंने वनवासी कल्याण आश्रम का अनुरोध–पत्र पढ़ा और जाना कि आज किस विषय पर बातचीत होने वाली है तो उनके हृदय में बड़ा कौतूहल पैदा हुआ। विचार किया कि यह क्या विषय है तो समझ में आया कि ये तो राम होकर जीने की अवधारणा है। राम होकर जीने से जो आज की चुनौतियाँ हैं, अपने भीतर दुष्प्रवृत्तियाँ हैं, आसुरी भाव है उन पर अंकुश लगाने की ये एक ऐसी पवित्र संकल्पना है कि हम स्वयं राम होकर सृष्टि की समस्या का समाधान बनें। अपने संबोधन में कहा कि अब हम विचार करें कि भारत चरित्र के मामले में कैसे परमुखापेक्षी हुआ। अभी–अभी जो

कोरोना काल बीता, उसकी भयानक लहर ने समाज की विचित्र–विचित्र चिंताधारा को नग्न किया। सारी दुनिया हतप्रभ हुई। हम सब भी हतप्रभ हुए। हम जानते हैं कि ऐसे लोगों का प्रतिशत ज्यादा नहीं है। हमें यह भी मालूम है कि षडयंत्र के चलते एक विषय इतना ज्यादा सामने रख दिया गया। लेकिन तिल होता है तभी तो ताड़ बनता है। कोई अपनों की लाश छोड़कर जा रहा है। तो कोई लाशों के कफन नोचकर कुछ पैसे कमाकर पैसे कमाने की कल्पना कर रहा है। या कोई बाजार में दवाइयों को महँगा बेचकर कालाबाजारी कर रहा है। लोगों के बुरे वक्त में अपना साधन सिद्ध करना चाहता है। विपरीत परिस्थितियों में जहाँ मौत चारों तरफ नृत्य कर रही हो, हर व्यक्ति को अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने की लगी है। ऐसा भी दृश्य देखने को मिला। ऐसे भी लोग भारतवर्ष में हैं और भारत में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो जनता को बेवकूफ बनाकर ऐसा वातावरण बना रहे हैं वे क्या भारत की मिट्टी में ही पैदा हुए हैं। निश्चित रूप से भारत की मिट्टी में ही पैदा हुए होंगे, लेकिन उन्होंने भारत को चित्त में नहीं जिया होगा। निश्चित रूप से वे भारत की मिट्टी में एक्सीडेंटली पैदा हो गए। भारत को नहीं समझे होंगे। उनकी चर्चा चारों तरफ हुई। ऐसे लोगों का प्रतिशत दो चार प्रतिशत ही होगा या आठ –दस प्रतिशत होगा। लेकिन बाकी जो समाज है, अपनी चित्त–चेतना में राम को लेकर जीता है।उन्होंने साधनों के अभाव में भी आगे बढ़कर समाज की सेवा करने का प्रयत्न किया। उसकी चर्चा नहीं हुई देश में। ये वितंडावाद है। भारत में जब व्यक्ति की ईर्ष्या प्रबल होती है तो उसे शुभता नहीं दिखाई देती। उसे कुछ और ही दिखाई देता है। उसका ये दुष्परिणाम आया। भारत की छवि विदेशों में इतनी बिगड़ी लोकचरित्र के मामले में, नैतिकता के मामले में कि लोग हमें बहुत अजीब समझने लगे हैं। बात–बात पर कसम खाने वाले हम लोग भगवान की कसम खाते हैं और भगवान की धज्जियाँ उड़ाते हैं, लोग हमारा चरित्र ऐसा समझते हैं। अब इस तरह के वातावरण के अंदर यह प्रश्न पैदा होना चाहिए कि जिन आराध्यों के नाम का स्मरण करते हुए, जिन आराध्यों के गीत और कीर्तन करते हुए हमने अपने जीवन के लक्ष्य निश्चित किए थे, आदर्शों पर चलना तय किया था, तो हम गाते ही रह गए, वे हमारे जीवन में नहीं उतर पाए। हम प्रार्थना ही करते रह गए। उसके चक्कर में हमने दोहरा जीवन जिया। बहुत सारे यक्ष प्रश्न हमारे सामने खड़े हो गए। बात कोई भी हो, छोटी या बड़ी। बात तो हम सबकी हो रही है न। एक सामाजिक चरित्र, उसमें कहीं न कहीं दाग है। कहीं न कहीं वैमनस्यता है। उसमें कहीं न कहीं स्वार्थपरता है। उसमें कहीं न कहीं अपने हितसाधन की दृष्टि प्रबल है। तो ऐसे में जरूरी है कि हम आराध्यों की केवल पूजा ही न करें, पूजा करना बहुत आसान होता है। लेकिन जब तक हम देवता नहीं बन जाते तब तक देवताओं की पूजा का अधिकार भी हमें प्राप्त नहीं होता। देवों के अर्चन के लिए अपने भीतर देवत्व धारण करना जरूरी होता है। इसलिए हमारा अहंकार बहुत चालाक है, कहता है कि साधन संपन्न लोग ही कर सकते हैं, भला हम जैसे छोटे लोग कैसे कर सकते हैं। इस तरह की धारणा ने हमारे अभिमान को और हमारी दुष्प्रवृत्तियाँ थीं, जो हमारी लालसाएँ थीं उनको धीरे–धीरे हमने अहंकार की चादर के नीचे पनपने दिया। हम सिर्फ राम जी की ही पूजा न करें बल्कि राम बन कर जिएँ। शंकर का आराधन भी करना चाहिए और शंकर बनने का प्रयत्न करना चाहिए। शंकर बनने के प्रयत्न में अर्घे पर चढ़कर पूजना होता है। बड़ा मुश्किल है अर्घे पर चढ़कर पूजन। भस्मासुरों को

वरदान देना। नीलकंठ बनकर जीना पड़ता है। तो हम शंकर के पुजारी हैं। और शंकर बनने का अभ्यास भी कर सकते हैं। किसी दिन भावना चित्त में जागे आज हम ब्रह्मा हो गए। और एक नई सृष्टि की रचना हम रच रहे हैं। कभी हमारा भाव प्रबल हो कि आज हम विष्णु हो गए, सबके पालन–पोषण की जिम्मेदारी हमारी है। हम राम हैं तो अपने पितृ की तरफ दृष्टि होनी है हमारी। राम के पिता वनगमन की आज्ञा दे नहीं पा रहे हैं। उनकी आज्ञा उनके शब्दों में नहीं आ पा रही है, क्योंकि वे विवश हैं। राम–प्रेम ने उनको विवश कर रखा है। राम अपने पिता की विवशता समझते हुए उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं। मजबूरी को समझ रहे हैं और चुपचाप उस राज्यारोहण, उस सिंहासन पर बैठने की बजाय वनवास की ओर अग्रसर हो जाते हैं। हमें अपनी तुलना इस तरह करनी चाहिए कि कदाचित कभी कोई पद न मिले, प्रतिष्ठा न मिले, मान्यता न मिले, पैसा न मिले, पद न मिले, पेट पालने का अवसर न मिले तो क्या हमारा चित्त शांत रह सकता है राम जी की तरह? कदाचित जैसे राम जी ने निषाद और केवट को गले से लगा लिया था, क्या हमारे हृदय में ऐसी भावना प्रबल है? कि यदि कोई हमारे सम्मुख खड़ा हो तो हम उसे जाति के चश्मे से न देखकर, वह निरीह है, वह असहाय है, उसे जरूरत है प्यार की, बाँहें उठे और उसे अपने आलिंगन में बाँध लें। क्या हम ऐसे राम हैं? केवट ने पार करवाया है। देने के लिए कुछ भी नहीं है। किंतु देने की भावना है। देना है उसको कुछ। साधन नहीं है। पर देने के लिए संकल्प सिद्ध है, ऐसी भावना। क्या किसी विश्वामित्र के पीछे हम भी ऐसे चल सकते हैं और कह सकते हैं कि गुरुदेव मार्ग प्रशस्त कीजिए। आप मुझ पर भरोसा कीजिए। आपके समस्त ब्रह्मास्त्रों का हम सज्जनों के परित्राण के लिए उपयोग करेंगे। दुष्टों के दमन के लिए प्रयोग करेंगे। क्या हमारे चित्त में यह भावना जागृत है कि कदाचित कोई संत पुरुष कहे कि चलो राम तुम्हें वनवासी पुकार रहे हैं। तुम्हें अरण्यवासी पुकार रहे हैं। चलो राम तुम्हें अहल्याओं का उद्धार करना है। चलो राम शबरियाँ तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। राम अयोध्या के राजभवनों की सुख–सुविधा का त्याग करके मेरे चरणों का अनुगमन करो। क्योंकि कोई शरभंग, कोई सुतीक्षण, कोई अगस्त्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है। वनवासी जगत पीड़ित है, त्रसित है। दलित है, वंचित है। उसका उद्धार करने के लिए चलो राम। मेरे पैरों का अनुगमन करो। ऐसा कोई आवाहन आए तो क्या हम भी अपने माथे पर अपनी धरती माँ की धूल को तिलक बनाकर धारण करके उस अकिंचन संन्यासी के पीछे, अकिंचन भाव से चल सकते हैं। चित्त को टटोलना चाहिए। टटोलना चाहिए कि सामने स्वर्णमयी लंका का आकर्षण हो, सामने राजसिंहासन वैभव हो, सामने अतिरेक हो वैभव का, सुविधाओं का और हमारी दृष्टि वहाँ न उठे। हमारी जन्मभूमि याद आए। मातृभूमि याद आए। अपनी माँ याद आए। अपनी धरती का ऋण याद आए। ऐसा क्या हम अपने चित्त में अनुभव कर सकते हैं। अपने को राम बनाकर देखना चाहिए। फिर स्वयं से प्रश्न पूछे कि क्या मैं राम हो सकता हूँ? हाँ, संभावना तो है नर में नारायण होने की। तो कितना रामत्व भीतर आया। सिर्फ चिंतन से नहीं। कर्तृत्व में कितना आया। क्या हम भी किसी ऐसी पीड़ित, परित्यक्त, पददलित, बलात्कारी से घर्षित, मान सम्मान से वंचित नारी के माथे पर हाथ रख सकने में तत्पर हो सकते हैं। हम कह सकते हैं क्या, देवी! हो गई घटना घटित। चलो उठो। आगे बढ़ो। पुरानी घटनाएँ दाग बनकर चित्त में नहीं बैठनी चाहिए। हाँ उन घटनाओं से सजग हो जाना चाहिए।

दुबारा कभी ऐसा न हो। दुबारा कोई हमारी शिथिलता का दुरुपयोग न करें। उठो अहल्या! तुम पत्थर बनने के योग्य नहीं हो। पाषाणी नहीं हो। तुम तो कल्याणी हो। इस भावना के साथ उन अहल्याओं का उद्धार करना हो तो क्या इतना बड़ा उदार हृदय हमारा है। यदि नहीं है तो उस हृदय को हम उदात्त और उदार भावों से कैसे भर सकते हैं। यह चिंतन होना बहुत जरूरी है। चिंतन ऐसा हो–'हाँ मैं राम हो सकता हूँ, शंकर की हाला हो सकता हूँ। हाँ, मैं शिवा का भाला हो सकता हूँ। हाँ, मैं राणाप्रताप की आन हो सकता हूँ। निश्चित रूप से मैं झाँसी रानी की बलिदानी भावना से ओत–प्रोत होकर प्रेरित हो सकता हूँ। सारी संभावनाएँ मेरे अंदर हैं। मेरे भीतर बाती है। मुझमें तेल है स्नेह का। मेरी काया के दीप में सारी सामग्री है। सिर्फ एक चिंगारी की जरूरत है। मेरे अंतस का दीपक जगर-मगर हो जाएगा। और मेरा रामत्व निखर आएगा। प्रकट हो जाएगा। इस भावना के साथ जब व्यक्ति चिंतन करता है तो वो देखते–देखते समष्टिगत हो जाता है। बहुत सारी चुनौतियों, बहुत सारी विपदाओं, बहुत सारे वितंडावादों के बीच में प्रत्येक भारतीय को राम बनना होगा। प्रत्येक भारतीय को अपने–अपने रणक्षेत्र में शौर्य का ही प्रयत्न नहीं करना होगा अपितु कभी–कभी वह रणक्षेत्र ऐसा भी होगा जिसमें शौर्य की जगह धैर्य उपकरण होगा। हाँ, रथ तो नहीं होगा किंतु सत्य का रथ होगा। हाँ, साधन तो नहीं होंगे परंतु साधना का बल होगा, तो हमारी यात्रा का लक्ष्य क्या है? पूरी आर्यावर्त्त की धरती को भारतीय संस्कारों से संस्कारित करके धन्य बनाना लक्ष्य है। हमारी मातृभूमि का अपमान जो करेगा या हमारी मातृभूमि को अपमानित करने का षड्यंत्र जो रचेंगे, हम उन षड्यंत्रों के संहारी बनेंगे। कैसे संभव होगा? जब राम के मंत्र की रचना हम रच लेंगे। हम निश्चित करेंगे कि हम सब मंत्रों के निर्माता, षड्यंत्रों का संहारकर्ता बनेंगे। हम हंसों को स्थापित करेंगे, बगुलों को नष्ट करेंगे, ये चित्त में संकल्प हो। उस संकल्प को हम सब मिलकर धारण करते है,

संकल्प के स्थापित होते ही उसकी पूर्ति की सामर्थ्य पैदा हो जाती है। संकल्प भी राम का है, सामर्थ्य भी राम का है, हम भी राम के हैं। जो लक्ष्य निर्धारित किया गया वह भी राम का है। श्रीराम स्वयं कहते हैं कि जब तक तू राम नहीं बन जाता, तब तक यह संभव नहीं है। तो राम कैसे बनेंगे? अपने मन की अशुद्धियों का त्याग करके। अपने व्यर्थ के अहं के वितंडावाद से मुक्त होकर। क्योंकि अहं एक मृगमरीचिका रचता है। चित्त की दुष्प्रवृत्तियाँ हैं, दुर्बलताएँ हैं, विफलताएँ हैं, हमें दूर कहीं सुख की अनुभूति करवाती हैं। ये सुख की अनुभूति मृगमरीचिका है जो मनुष्य को भटकाती है। राम कहते हैं कि- हे वर्तमान के राम! कहीं स्वर्ण के मृग के पीछे चल नहीं देना। तेरा मन राम है। तेरे मन के राम को ये मृगमरीचिकाएँ दूर ले जाएँगीं, शांति रूपी जानकी से कहीं दूर। अगर सजगता है तो वह मनुष्य कभी भी भ्रमित नहीं होता। लक्ष्य के प्रति सजग रहता है। काया को परिश्रमी भी बनाता है। चित्त को संयमी बनाता है। बुद्धि को विवेकवान बनाता है। चित्त में करुणा के बीज रोपता है। स्वयं

को अहंकार मुक्त कर लेता है। और राम हो जाता है। संसार कहता है कि यही है ईश्वर। इसी को पुण्य कहते हैं। यही है धन्य होने का मार्ग। हम देखते हैं कि कदाचित उसमें हम किसी दूसरे को प्रकाश दे सकें या न दे सकें और इस तरह कहीं न कहीं हमारा अंत:करण जरूर प्रकाशित हो जाता है। इत्र की दुकान पर जाने पर इत्र भले ही न खरीदा जाए किंतु इत्र की महक हमारे नासापुटों को जरूर महका देगी। पुष्पों के बगीचे में जाने से उसकी सुगंध–सौरभ आपको जरूर धन्य कर देगी। इसीलिए लक्ष्य बनाओ बड़ा–"देवत्व को धारण करना है, रामत्व को धारण करना है, तीर्थत्व को धारण करना है, मनुष्यत्व को धारण करना है, राष्ट्रीयत्व को धारण करना है और माँ भारती का सपूत बनना है।" जिसका बनते हैं उसको भी गौरव होना चाहिए। ये मेरा है। नहीं तो लोग अपनों से मुँह छुपाते हैं। कभी–कभी अपनों के कुकर्म ऐसे होते हैं कि लगता है कि ये बवाल कहँ से गले पड़ गया। अपनी माँ भारती अपनी संतानों का गौरवपूर्ण परिचय तो दे सके इस योग्य अपने चरित्र की शुचिता निश्चित करें हम। ये कैसे होगा। जिस पश्चिम की हम निंदा करते नहीं थकते वहाँ बहुत सारी चीजों के प्रति समाज को स्वतंत्रता है। नेतृत्व को स्वतंत्रता नहीं है। अगर नेतृत्व गड़बड़ करता है तो जनता कह देती है हमको शुद्ध करना चाहते हो तो पहले स्वयं शुद्ध होवें। वह व्यक्ति ही सही नेतृत्व कर पाता है जो स्वयं अनुशासित रहता है। शुचितापूर्वक पवित्रता का जीवन जीता है। तो क्या हमें देखना नहीं चाहिए कि हमारे आस–पास जो हो रहा है वह सही नहीं हो रहा है। और यदि हम नहीं देख रहे हैं तो यही सिद्ध होता है कि हम कायर हैं। हम इसलिए नहीं देख पाते हैं कि जो है वह छिन जाएगा। जो पाने की लालसा है उससे वंचित हो जाएँगें। हम क्या छिन जाने से डरते हैं? मौत तो सब कुछ छीन लेती है। अगर शरीर छीन लिया जाएगा तो बाकी बचेगा क्या? यहाँ तो सब कुछ अतीत हो जाने वाला है। अभी–अभी, हमने देखा, मृत्यु का तांडव नृत्य, सर पर काल के मंडराने का डरावना दृश्य। काल प्रबलता के साथ लोगों को समेटता जा रहा है, ऐसे में तो हमें समझ आ ही गया होगा कि जो फूल सुबह खिलते हैं शाम को मुरझा जाते हैं। मिट्टी में मिल जाते हैं। जब हम संसार की इस नश्वरता से भली भाँति परिचित हैं तो हमें कुकृत्य से बचना है। मर्यादाओं के उल्लंघन से बचना है। राम बनकर स्वयं से प्रश्न पूछना है कि हमसे गलती कहाँ हुई? जो स्वयं का परीक्षण करता है, निरीक्षण करता है वही है जो इस तरह से स्वयं को पवित्र कर पाता है। अपनी दुर्बलताओं में सुख लेकर हम राम नही बन सकते हैं। दुर्बलताओं का त्याग करके अपने अंत:करण की सबलता को जागृत करना जरूरी है। सबल वह नहीं होता जिसकी भुजाओं में बल है या जो बाहुबली है। बहुत बड़ा बल होता है चरित्र का, नैतिकता का, सत्य का। भेदभावपूर्ण दृष्टि हमारे चरित्र का गुण कभी भी नहीं है। निष्पक्षता हमारे मुखमंडल पर दिव्य आभा बिखेर देती है। प्रभु राम के जीवन में यही था। उन्होंने कभी भी भेद नहीं किया। जटायु को अपनी गोद में रखकर उन्होंने पिता–तुल्य सम्मान दिया। मांसभोजी जटायु के स्पर्श में जरा भी संकोच नहीं किया। राम ने जटायु से कहा था कि तात मैं आपको जीवन दे सकता हूँ। जटायु ने राम के इस विनय को स्वीकार नहीं किया। रामभद्र के अंक में जानकी के सम्मान की रक्षा के लिए प्राणों के उत्सर्ग को अपना सौभाग्य माना। किंतु उसी जगह भीष्म पितामह को बाणों की शय्या पर मृत्यु की प्रतीक्षा करनी पड़ी। कर्तव्यों के पालन में जो चूक जाते हैं उनको शूलों के संत्रास झेलने ही

पड़ते हैं। बाहरी शूल भले न चुभें किंतु अंतरात्मा कचोटती है। इसलिए जब हम अपने उद्देश्यों में स्पष्ट होते हैं, आदर्श के लिए तत्पर होते हैं और हमारे चित्त में कोई द्वन्द्व नहीं होता तब हम निर्द्वन्द्व होकर रामत्व को धारण करते हैं। आज भारत भूमि भी व्याकुल है। अभी हिन्दू जाति को अभिमन्यु बनाकर पापियों ने घेर लिया है। बहुत विषम काल है। राजनीतिक विचारधाराओं की लड़ाई नहीं है ये। ये आसुरी ताकते हैं जो सनातन की शाश्वतता को मिटाने के लिए आतुर हैं। भारत के स्वाभिमान को धुँआ बनाकर विदेशों के अंदर सुख लूट रहे हैं। ऐसी विषम परिस्थितियों में सज्जनों का शांत होकर बैठना उचित नही है। ये समय है कि सबको संन्नद्ध होना होगा, सबको सक्रिय होना होगा, आसुरी प्रवृत्तियों का शमन करना होगा। क्योंकि अगर अभी चूके तो फिर अवसर नहीं मिलने वाला। बस यही भावना है जो पैर में रवानी बनेगी । यही संकल्प है जो हमें योद्धा बनाएगा। यही संकल्प हममें शौर्य भर देगा। यही संकल्प हमें त्यागी राम की तरह पादुका त्यागने को विवश कर देगा। पर शौर्य रूपी धनुष–बाण का त्याग हम कर नहीं पाएँगें। इसलिए राम बनना होगा। राम को मति में धारण करना होगा। राम को अपनी गति बनाना होगा। राम कर्म में आ जायेंगे, राम धर्म मे आ जायेंगे तो राम होना आसान हो जाएगा। राम होने की कीमत चुकानी पड़ती है। उसके लिए इंद्रियों से, मन से, अंत:करण चतुष्टय से, अपनी ऐहिक लालसाओं से, लौकिक महत्त्वाकांक्षाओं से मुक्ति पाकर प्रकृति के पार जाकर ही राम हो पायेंगें। फिर जब राम हो जायेंगे तो प्रकृति के रक्षक बनेंगे, अहल्याओं के उद्धारक बनेंगे, शबरियों के चित्त को संतोष से भर देंगे, केवटों को बाँहों में बाँध लेंगे। शरभंग की प्रतीक्षा पूरी हो जाएगी। सुतीक्ष्ण धन्य हो जाएँगें। अगस्त्य की योजनाएँ संपन्न कर पाएँगें। सुग्रीव का साहस जगा पाएँगें। अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध जन–जन की चेतना जागृत हो जाएगी। और देखते–देखते कोटि–कोटि हनुमान हमारा अनुगमन करने आगे आ जाएँगें । देशमाता को आसुरी षड्यंत्रों से मुक्त कराने में सहयोग करेंगें। वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के जीवन को यज्ञ की संज्ञा देते हुए दीदी माँ ने कहा कि कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता देवतुल्य हैं। आपने कहा कि ये संधिकाल है, संक्रमण की बेला है, चारों तरफ आसुरी शक्तियाँ संहार करने को सन्नद्ध हैं। इसलिए अपनी चित्त–चेतना पर संकल्प का धनुष आरूढ़ करना होगा और राम बनना होगा। मै ही राम हूँ ये कहने की साधना की आग में से गुजरना होगा। माँ भारती के आँगन में फैलाए जा रहे झूठे धुँए को नष्ट करने के लिए राम बनकर गली–गली, जन–जन तक पहुँचना होगा, प्रेम का दीप जलाना होगा। धुआँ छोटा होता है। आसमान बड़ा होता है। हमारी माँ भारती का आसमान बहुत बड़ा है। निश्चित रूप से षड्यंत्रों के धुएँ नष्ट होंगे। आलोक छाएगा। साधना संपन्न होगी। राम बनकर प्रेम बाँटना होगा। कर्तृत्व की भावना जब बड़ी होती है तो समस्या बड़ी नहीं होती समाधान बड़ा होता है। कृष्ण और सात्यकि के उदाहरण से स्पष्ट किया कि जीवन और समाज की समस्या के ब्रह्मराक्षस का शमन करने के लिए मुस्कराकर सामना करना होता है। रामत्व को, कृष्णत्व को मनुष्यत्व को और राष्ट्रीय भाव को जागृत करके जब हम खड़े होंगे तो समस्त समस्याएँ नष्टप्राय हो जाएँगीं। कल्याण आश्रम के लक्ष्य के शुभसंकल्प को शुभकामनाएँ देते हुए निरंतर सेवाभाव को जगाए रहने का शाश्वत आशीर्वाद दिया। ■

मैं का समाप्त होना ही रामत्व है: डॉ. कृष्ण गोपाल

यू-ट्यूब प्रतिलेखन
डॉ. तारा माहेश्वरी
गोवाबागान महिला समिति

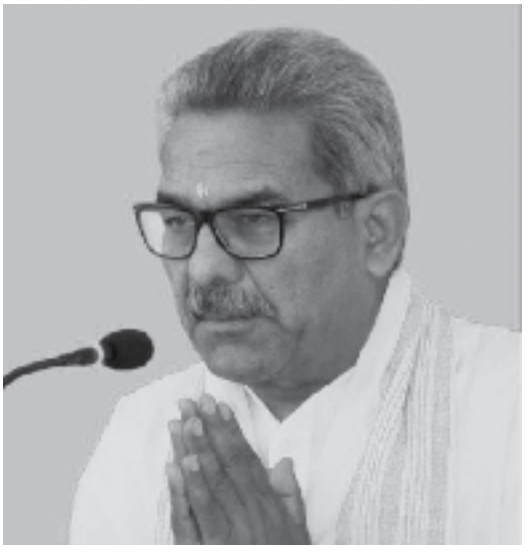

अहं रामः अस्मि....मैं राम हूँ.....प्रबोधनमाला के तीसरे तथा समापन सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय कृष्णगोपाल जी का संजीवनी व्याख्यान आयोजित हुआ।

प्रभु श्रीराम का चरित्र एक ऐसा आदर्श है, जिसको आज विश्व की लगभग सभी भाषाओं में लिखा गया है। भगवान राम के आविर्भाव को कितनी शताब्दियाँ बीत गईं यह कहना कठिन है। किंतु राम का चरित्र आज भी तेजस्वी सूर्य के समान प्रकाशवान है। करोड़ों लोगों को समाज जीवन की प्रत्येक दशा में प्रेरणा देता रहता है। शताब्दियाँ बीत जाती हैं किंतु राम हर युग में हमको व्यावहारिक लगते हैं, आत्मीय लगते हैं, हमारे निकट लगते हैं। हम सभी राम का चरित्र भली प्रकार से जानते हैं। रघुकुलनंदन राम, ऐसा लगता है कि हमारे परिवार के ही हैं। उनके जीवन के प्रसंग भारतीय जनमानस में बड़ी गहराई तक पैठ गये है। कोई भी अन्य चरित्र भारतीय मानस में वह स्थान नहीं बना पाया जो स्थान श्रीराम का है। राम के जीवन के अनेक प्रसंग लोकोक्तियों में पिरोये गये हैं। रामकथा से जुड़े छोटे–छोटे वाक्य या घटनाएँ पूरे प्रसंग को स्मरण करा देती है। मुहावरों के रूप में भगवान राम ने हमारे जीवन में अपना गहरा स्थान बनाया है। उदाहरण के लिए दशरथ के चार बेटे हैं। रामजी की अयोध्या है। राम की जन्मभूमि है। रामनवमी है। कहीं धनुषभंग है। राम का विवाह है। केकैयी और मंथरा है। राम का वनवास है। केवट की नाव है। भरत का आगमन चित्रकूट में होता है। सीता का हरण और जटायु का मरण, हनुमान जी की पूँछ, सुग्रीव की मित्रता, नल और नील द्वारा सेतुबंध, बालि का मरण, लंका का दहन, सोने का हरिण, माता सीता की अग्निपरीक्षा, शबरी के बेर, अंगद का पैर, रावण का अहंकार, विभीषण का राज्याभिषेक, पत्थरों का तैर जाना, रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना, अशोक-वाटिका, अयोध्या वापसी आदि अनेक प्रसंग ऐसे हैं जो राम से जुड़े हैं। और सामान्य जनजीवन में बड़ी गहराई तक अपना स्थान बना लिए हैं। राम जी हमारे जीवन में सर्वाधिक गहरे बैठे हैं। हम जितना अधिक रामजी के बारे में जानते हैं उतना किसी और व्यक्तित्व के संबंध में नहीं। लेकिन प्रश्न उठता है क्या हम राम के अनुसार जीते भी हैं। हम राम

को जानते हैं लेकिन क्या हम राम को मानते भी हैं। यह हमारे सामने एक बड़ा प्रश्न भी है। राम के प्रति हमारे हृदय में श्रद्धा अगाध है। राम हमारे अंतस्थल में सदैव विराजमान हैं, लेकिन हम राम के अनुसार जिएँ। हम राम का गुणगान तो करते हैं लेकिन वे हमारे जीवन में निर्णायक मार्गदर्शक के रूप में स्थापित हैं क्या? आज यह एक महत्त्वपूर्ण विषय है जिस पर हमलोग चर्चा करेंगे।

हम देखते है कि भगवान राम का जीवन एक विचित्र जीवन है। सभी लोगों के जीवन में अच्छे और बुरे प्रसंग आते हैं। अनेक बार कठिन परिस्थितियाँ खड़ी हो जाती हैं। राम का जीवन उद्वेलित नहीं होता। राम का मन धैर्यवान मन है। राम अधीर नहीं होते। विपरीत परिस्थितियों में वे अवसादग्रस्त नहीं होते। राम के पिता दशरथ उनको बुलाकर कहते हैं कि कल उनका राज्याभिषेक करेंगें। राम आनंद में मग्न नहीं हो जाते। राम वैसे ही शांत रहते हैं। इतने बड़े साम्राज्य का राजा बन जाना आनंद की बात है। किंतु राम खुशी से फूलकर कुप्पा नहीं बन जाते और अगले ही दिन राम को जब बताया गया कि आपको चौदह वर्ष के लिए वनवास में जाना है तो वे दु:खी नहीं होते, अवसाद में नहीं चले जाते। विचित्र जीवन है उनका।

दूसरा उदाहरण राजा दशरथ का हैं। वे चक्रवर्ती सम्राट हैं। राम के राज्याभिषेक के प्रसंग को लेकर वे प्रसन्न हैं। परिस्थितियां उलट जाती हैं। केकैई दो वरदान मांग लेती हैं। चौदह वर्ष का वनवास राम को दिया जाए ऐसा सुनकर दशरथ परेशान हो जाते हैं। दशरथ अवसाद में चले गए। दशरथ गिर पड़े। फिर उठ न सके। पुत्र को चौदह वर्ष का वनवास इस समाचार से ही वे उठ न सके। धीरे–धीरे कुछ दिनों बाद ही वे प्राण छोड़ देते हैं।

दशरथ का यह स्वभाव है कि वे ऐसी घटना को सहन करने के लिए अपने मानस को तैयार नहीं कर सके। दूसरी ओर राम का मन है। उनको भी यही समाचार मिला है। राम को तो स्वयं जाना है। राम राज्याभिषेक और वनवास दोनों समाचारों में स्थिरप्रज्ञ हैं। राज्याभिषेक के समाचार से वे आनंदातिरेक में बह नहीं जाते। वनवास का समाचार सुनकर वे अवसाद ग्रस्त नहीं होते। किसी भी कठिन परिस्थिति में राम सामान्य रहते हैं। राम शोक में नहीं डूब जाते। राम प्रसन्नता के साथ मुस्कुराते हुए हर विपदा में शांत रहते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि कभी-कभी भीषण विपत्ति आ सकती है और उस भीषण विपत्ति में हमें शांत रहना है। राम की विपत्तियाँ तो बढ़ती ही जाती हैं। एक के बाद एक नई विपत्तियाँ आती ही जाती हैं। राम चित्रकूट में गए हैं, लेकिन थोड़े दिनों बाद ही भरत आ जाते हैं। भरत माताओं को लेकर आए हैं। राम के सामने बड़ा संकट है। राम को अयोध्या वापस चलने के लिए तीनों माताएं अनुनय विनय करती हैं। यहाँ तक कि केकैयी भी क्षमा माँगती हैं। गुरु वशिष्ठ भी वापस चलने के लिए आदेश देते हैं। राम के सामने उनके कुल के गुरु खड़े है, माताएं खड़ी हैं, भरत जिसको राज्य मिला वो खड़ा है, भरत चलने का आग्रह करते हैं, राम के सामने बड़ा संकट है कि सबकी बात मानें या न मानें। मानने से पिता को दिए हुए वचन से अलग हटना पड़ेगा। राम के धैर्य की परीक्षा है। राम विचलित नहीं होते। सीता का हरण होता है। लक्ष्मण को शक्ति लग जाती है। राम विचलित नहीं होते। संकट के समय जो व्यक्ति अपने को शांत रखता है, किसी भी प्रकार के समाचार आने पर जो हिम्मत के साथ सामना करता है, उसका नाम है राम। जो विचलित हो जाता है वह राम नहीं है। एक के बाद एक कठिन परिस्थिति का सामना करने के लिए जो मन से तैयार है, वह सच में राम है। राम के जीवन

के अनेक प्रसंगों के उदाहरण से हमको ये बात समझ आती है कि कठोर से कठोर परिस्थितियाँ आने से हमको विचलित नहीं होना है। हिम्मत के साथ उसमें से मार्ग निकालना है। यही जीवन कौशल है।

राम के जीवन से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि प्रत्येक परिस्थिति में परामर्श करके चलना। राम सब जानते हैं। अनेक प्रकार की शक्तियों से राम युक्त हैं। किंतु राम का एक वैशिष्ट्य है, राम का एक गुण है। वह गुण है कि अपने साथ के लोगों से परामर्श करके चलना। राम सिखाते हैं कि अपने सहयोगियों के साथ परामर्श करके चलना चाहिए। प्रसंग आता है कि राम समुद्र के किनारे खड़े हैं। आगे जाना है। क्या करना चाहिए। राम को सब लोगों ने बताया कि जो देता है, वह देवता है। समुद्र बहुत कुछ हमको देता है। समुद्र में विष्णु और लक्ष्मी का वास है। समुद्र का पानी वाष्प बनकर मेघ बनता हैं, वर्षा होती है। इसी से सम्पूर्ण सृष्टि चलती है। और जैसे अग्नि देवता है, वायु देवता है, वन देवता है, वृक्ष देवता है वैसे ही वरुण देवता है। जो देते हैं, वे देवता हैं। समुद्र भी देता है इसलिए समुद्र भी देवता है। अत: समुद्र के पार जाना है तो समुद्र से अपने को अनुमति लेनी चाहिए। राम विभीषण को पूछते हैं। राम हनुमान और सुग्रीव के साथ भी परामर्श करते हैं। सुग्रीव और हनुमान मिलकर विभीषण के पास जाते हैं। विभीषण को पूछते हैं कि इस परिस्थिति में करणीय क्या है? विभीषण कहता है कि समुद्र राजा है, अत: राम आप समुद्र की शरण में जाइए। विनम्रता के साथ समुद्र से रास्ता माँगिए क्योंकि समुद्र आपके पूर्वजों ने बनाया था। राजा सगर ने समुद्र का निर्माण किया था। आपके पूर्वजों ने भूमि को खोदकर समुद्र का निर्माण किया है इसलिए आप समुद्र की शरण में चले जाइए। राम मान लेते हैं। राम विभीषण की बात मानते हैं। राम सुग्रीव हनुमान से पूछते हैं। राम लक्ष्मण से भी विभीषण के परामर्श की प्रशंसा करते हैं। लक्ष्मण की विद्वता की प्रशंसा करते हुए उनसे भी परामर्श करते हैं। लक्ष्मण के माध्यम से सुग्रीव के मन की बात भी जानना चाहते हैं। इस प्रकार अपने निर्णय में अपने निकटस्थ सभी को सम्मिलित करते हैं। सबको सम्मान देकर सम्मिलित करते हैं। सबसे परामर्श किए बिना आगे नहीं बढ़ते। राम सर्वज्ञाता हैं, राम सर्वशक्तिमान हैं, लेकिन उनके निकट कौन बैठे हैं- हनुमान, विभीषण, सुग्रीव और लक्ष्मण। और इनसे परामर्श करके ही निर्णय लेना। तो क्या हमारे अंदर राम हैं, क्या हम भी अपने सहयोगियों के साथ विनम्रता का व्यवहार करते हैं? समय आने पर क्या हम उनके साथ परामर्श करते हैं, मिलकर सहमति बनाते हैं? वैदिक ऋषियों ने कहा था **संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्**। राम को देखने के लिए राम के आचरण को देखना चाहिए। राम की तरह मिलकर चलें, मिलकर बात करें, एक दूसरे के मन की बात को अच्छे से समझें। भगवान राम इन सारी पद्धतियों के प्रतीक है। राम सब कुछ जानते है किंतु कदम–कदम पर परामर्श करते रहते है। सेना लंका में उतर गई है। युद्ध करना ही पड़ेगा ऐसा प्रसंग आ गया। किंतु युद्ध करो ऐसा राम नहीं कहते। अपने सब मित्रों और सचिवों को बुला लेते है। परामर्श करते है। बाबा तुलसीदास जी ने भी लिखा ...**प्रात:काल जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बोलाई।। कहहु बेगि का करउ उपाई।।** देखा जाए तो युद्ध की पूरी तैयारी हो चुकी है। पूछने का कोई अर्थ नहीं, फिर भी राम तुरंत सबको युद्ध में झोंक नहीं देना चाहते। पहले सबसे परामर्श लेते है। जामवंत जी एक नया सुझाव देते हैं। जामवंत युद्ध के लिए स्वीकृति नहीं देते। राम एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में बैठे हैं। युद्ध का बिगुल बज चुका है किन्तु मित्रमंडली का एक वरिष्ठ सदस्य

जामवंत शांतिदूत भेजने का प्रस्ताव देते हैं। उनका कहना है कि शायद रावण मान जाए। और युद्ध की ज्वाला में जलने से लोग बच जाएं। राम जामवंत के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते हैं। राम अंगद को शांतिदूत बनाकर लंका भेज देते हैं। अपने यहाँ कहा भी गया है कि जब सचिव, वैद्य और गुरु बिना किसी भय के सलाह देते हैं, वह ही योग्य हैं। जामवंत की सलाह राम के मन के अनुकूल नहीं है। सेना युद्ध के लिए तैयार है। फिर भी जामवंत को लगता है कि युद्ध टाला जा सकता है क्या? और वे राम को शांति स्थापित करने की सलाह देता है। राम उनकी बात मान लेते हैं।

अब अपने जीवन में इसका विचार करें। हमारे जीवन में कई बार छोटे–मोटे विवाद हो जाते हैं। हम तुरंत कोर्ट–कचहरी का मार्ग अपना लेते हैं। विवाद खड़ा हो जाता है। मनोमालिन्य हो जाता है। वार्ताकार नहीं मिलते। परिवार टूट जाते हैं। राम का जीवन हमको यह बात सिखाता है कि उदारमन से वार्ता करते रहें। शांति हर कीमत पर वरेण्य है। रावण को बार–बार शांति का संदेश दिया जाता है। राम का जीवन बार–बार हमें सिखाता है कि शांति की ओर ही सदैव बढ़ना चाहिए।

क्या करें, क्या न करें यह संकट बार–बार विद्वानों को ही पकड़ता है। युद्ध को लेकर राम बार–बार चिंता कराते हैं। उन्हें लगता है कि युद्ध होने से बहुत से लोगों को अपने जीवन से हाथ धोना पड़ जाएगा। राम को लगता है कि उनके कारण बहुत से लोगों पर संकट आ गया। माता–पिता, भाई, पत्नी सभी पर संकट हैं। यही व्यथा राम हनुमान के सामने रखते हैं। तब हनुमान राम जी को समझाते हैं कि अशोक वाटिका में बैठी सीता सिर्फ आपकी पत्नी नहीं है बल्कि अखिल विश्व की महिलाओं की स्वतन्त्रता और सम्मान की प्रतीक हैं।

रावण ने सीता माता का हरण कर केवल आपकी पत्नी का हरण नहीं किया बल्कि लाखों-करोड़ों महिलाओं की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिह्न लगा दिया है। अत: ये युद्ध सम्पूर्ण क्षेत्र की महिलाओं की स्वतंत्रता के लिए युद्ध है। हनुमान कहते हैं कि ये युद्ध राम का व्यक्तिगत युद्ध नहीं है। अपितु सम्पूर्ण समाज के लिए है। यहाँ हनुमान सामान्य जन का प्रतिनिधित्व करते हैं। राम का महामानवत्व इसी में है कि वे सामान्य मानव के मन के भाव को समझ लेते हैं। राम लोकमन को अनुभव करते हैं। सामान्य जन की व्यथा को दूर करने के लिए प्रयत्नशील हो उठते हैं। राम अपनी व्यथा और संशय को छोड़ देते हैं। सामान्य लोगों के लिए आगे बढ़ जाते हैं। इसलिए महामानव तो वही है जो सामान्य जन की भावनाओं का सम्मान करता है, सामान्य लोगों के दु:ख दर्द को दूर करने के लिए अपनी क्षमताओं का प्रयोग करता है। राम इन सबको साथ लेकर चलते हैं। राम का रावण से युद्ध एक व्यक्ति का युद्ध नहीं है, राम सबको लेकर अत्याचारी रावण के विरुद्ध सामान्य जन को तैयार कर लेते हैं।

किंतु बड़े–बड़े लोग अत्याचार के विरुद्ध चलने वाले संघर्ष में भाग लेने के लिए सोच विचार में पड़ जाते हैं। उदाहरण के लिए स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष करने के लिए बहुत लोग आगे नहीं आते थे। बड़े–बड़े विद्वान लोग, व्यापारी वर्ग, राजे–महाराजे सामने नहीं आते थे। ऐसे लोग हारने और जीतने वाले का मुख देखकर सामने आते थे। इसका सुंदर वर्णन राम के चरित्र में है। देवता लोग ध्यान से देख रहे हैं कि राम–रावण युद्ध में कौन विजयी होगा? रावण तो कभी किसी से हारा नहीं। जब यह निश्चित हो गया कि रावण की क्षमता धीरे-धीरे समाप्त हो रही है और राम ही विजयी होंगे तब इन्द्र अपने रथ को राम के लिए भेजता है। सामान्य जन तब विचार

करता है कि पहले दिन से तो राम पैदल ही लड़ रहे हैं। पहले इन्द्र को समझ नहीं आया था कि इस युद्ध में राम को भी रथ की आवश्यकता पड़ेगी। फिर भी राम इन्द्र द्वारा भेजे गए रथ को स्वीकार कर लेते हैं। आज भी समाज में भी ऐसे लोग हैं जो जीतने वाले और हारने वाले का विचार करके ही खड़े होते हैं। राम का जीवन यह संदेश देता है कि यदि भगवान ने सामर्थ्य दिया है तो धर्म के साथ खड़े होना है।

अपने चरित्र के माध्यम से राम एक नया संदेश देते हैं कि मरने के बाद सभी वैर और वैमनस्य समाप्त हो जाते हैं। विभीषण अपने भाई रावण का अंतिम संस्कार करने को तैयार नहीं है, लेकिन राम विभीषण को समझाते हैं कि वैर छोड़ देना चाहिए। राम के हृदय की विशालता ही है कि वे रावण को अपना भाई कहते है क्योंकि विभीषण को राम अपना भाई मानते है। रावण का ससम्मान अंतिम संस्कार करवाने के लिए विभीषण को तैयार कर लेते हैं।

राम युद्ध जीत गए। युद्ध का श्रेय सभी को देते हैं। महामानव की परिभाषा स्थापित करते हैं कि जो छोटों को श्रेय देते हैं वे ही महान होते हैं। अपनी सफलता का श्रेय जो अपने पास रख लेते हैं वे महान नहीं होते हैं। इसलिए राम युद्ध में विजय का श्रेय कभी विभीषण, कभी हनुमान, तो कभी लक्ष्मण को देते हैं। कभी नल और नील को तो कभी अंगद को। मेरे कारण विजय मिली ऐसा उन्होंने कभी नहीं कहीं। **मैं का समाप्त होना ही रामत्व है। सफलता का श्रेय सब साथियों को देना रामत्व है।**

इस संबंध में राष्ट्रपति कलाम का उदाहरण देते हुए माननीय कृष्ण गोपाल जी ने बताया कि एक बार सेटेलाइट का प्रक्षेपण असफल हो गया तो असफलता की सारी ज़िम्मेदारी सतीश धवन साहब ने स्वयं स्वीकार की जो इस प्रक्षेपण का नेतृत्व कर रहे थे। लेकिन दूसरी बार जब प्रक्षेपण सफल हुआ तो धवन साहब ने सफलता का श्रेय कलाम साहब और उनकी टीम को दिया। अर्थात जीतने के बाद, यश प्राप्त करने के बाद उसका श्रेय दूसरों को देना और असफलता का दायित्व स्वयं लेना यह हमको राम ने सिखा दिया है। रामत्व वह है जो यश को दूसरे के गले में डाल देता है। राम दूसरों के गुण की प्रशंसा करते हैं। राम सच में देवत्व को लेकर अवतरित हुए हैं। मनुष्य के सामान्य विकारों से ऊपर उठे हुए महामानव के रूप में राम हैं। राम का रामत्व ही है कि वे विभीषण से रावण के गुणों की प्रशंसा करते हैं। राम के हृदय की विशालता है कि वे अपने शत्रुओं के गुणों को हृदय से अनुभव करते हैं। रामत्व का अर्थ है गुणग्राही होना।

संपूर्ण रामायण का सारांश मंदोदरी कह देती है कि पाप का फल अच्छा नहीं होता। पाप कर्म का फल अवश्य मिलता है। रावण के मृत शरीर के पास विलाप करती हुई कहती है कि **अवश्यमेव लभते फलं पापस्य कर्मणः।** परिवार के एक सदस्य का पाप कर्म सभी को भोगना पड़ता है इसलिए सभी के साथ हमारा व्यवहार धर्ममय हो। हमारे अंदर बैठा हुआ रामत्व बार–बार हमसे यही आग्रह करता है कि **सत्यं वद,धर्मं चर**। राम धर्म के आग्रही हैं। मंदोदरी का विलाप पूरी धरती की स्त्री जाति का विलाप है। मंदोदरी का संदेश शाश्वत है। राम नगर में न जाने की अपनी प्रतिज्ञा से आबद्ध हैं। इसलिए राम लंका में प्रवेश नहीं करते। राम दो वचन एक साथ नहीं रखते। विभीषण के राज्याभिषेक में लंका नगरी में प्रवेश नहीं करते। **रामो द्विर्भिनभाषते।**

अब हम राम के विराट और विशाल व्यक्तित्व का अनुभव करें। राम अयोध्या वापस आ जाते हैं। राम का मन ढूँढता है उसको जो विपत्ति में है। अयोध्या आकर सोचते हैं कि सबसे पहले किससे मिलना चाहिए? केकैई आत्मग्लानि में है, इसलिए सबसे

पहले केकैई के महल में जाते हैं। दोनों ही रोते हैं। केकैई के मन का संताप निकल गया। गलती करना मानव स्वभाव है किंतु गलती को क्षमा करना ही रामत्व है। रामभाव है। यदि हमारे मन में रामभाव जीवित है तो हम क्षमा करना सीख जाते हैं।

राम का व्यक्तित्व शून्य से ब्रह्मांड खड़ा कर देता है। हम राम के जीवन को विस्तार से देखें तो पाते है कि वनवास राम को मिला लेकिन तीन लोग वनवास चले गए। राम लक्ष्मण और सीता जी साथ है। 3000 किलोमीटर की यात्रा की। दो-दो साम्राज्य की स्थापना की। राम जब लौटे तो जगह-जगह उनके अनुयायी साथ खड़े थे। स्थान-स्थान पर राम को मानने वाले लोग है। दो-दो साम्राज्य साथ खड़े है। ऐसे प्रचंड आत्मविश्वास वाले राम है। रामत्व का अर्थ है पुरुषार्थी राम। निराशा में आशा का संचार करना ही रामत्व है। शून्य से ब्रह्मांड स्थापित करना रामत्व है। हम रामभक्त ऐसे ही है। हम इस घोर संकट में निराश नहीं होंगे। अपने भीतर रामत्व को जागृत कर हम इससे बाहर आयेंगे।

राम के जीवन के भिन्न-भिन्न घटनाक्रम अगाध समुद्र की तरह हैं। राम के जीवन के सभी प्रसंग, हमारे जीवन में एक नया विश्वास जगाते हैं।

रामकथा हमारे लोक में युगों–युगों से प्रवहमान है। राम ने अपने आचरण से लोकमानस का मार्गदर्शन किया। राम ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा। कोई उपदेश नहीं दिया। राम और राम कथा के प्रत्येक पात्र ने अपने-अपने आचरण द्वारा रामत्व की सही परिभाषा स्थापित की। कठिन समय का हिम्मत से सामना करना राम है। प्रभु राम का चरित एक ऐसा आदर्श है जो हमें हर कालखंड में व्यावहारिक लगता है। रामचरित के विभिन्न आयाम हमारे चित्त में गहराई से बैठे हैं। संकट की घड़ी में धैर्य को नहीं त्यागना राम ने अपने आचरण द्वारा स्थापित किया। राम के चरित्र के अनुसार जीना, यह एक बड़ा यक्ष प्रश्न है। राम के जीवन के विभिन्न घटनाक्रम हमारे जीवन में आनंद भरकर हमें वैसा अनुकरण करने की सीख देते हैं। राम की सरलता, सहजता, सहनशीलता, सुभगता जीवन को अवसाद से बाहर आने की प्रेरणा देती हैं। भीषण विपत्तियों में भी हमें अशांत नहीं होने देती, ऐसा है राम का आचरण।

प्रबोधमाला के अपने दिव्य, सामयिक और अलौकिक संबोधन में माननीय कृष्णगोपाल जी ने आगे कहा कि जो सिद्ध है वह राम है। जो विचलित नहीं होता वह राम है। अपने देश और समाज को युद्ध में बिना डाले युद्ध जीतना ही राम का जीवन कौशल है। राम का जीवन सिखाता है कि हम उदार मन से वार्ता करते रहें। रामकथा के सभी पात्रों, संत तुलसीदास, भक्त सूरदास और आधुनिक भारत के व्यक्तित्वों के उदाहरणों से अपने वकत्व्य को संपुष्ट करते हुए कृष्णगोपाल जी ने संदेश दिया कि राम धर्म के प्राण हैं। राम साक्षात विग्रहवान धर्म हैं। धर्म साक्षात जन्म लेकर राम के रूप में प्रकट हो गया। यही राम है। ■

अमृत वचन

भारतीय युवाओं के सामने बड़े लक्ष्य हों, छोटी-छोटी आशाओं के पीछे भागना गुनाह है। जो सपने देखते हैं और उन्हें सच करने की हिम्मत रखते हैं उन्हें दुनिया सम्मान और स्नेह देती है।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जो व्यक्ति जीवन में कुछ करना चाहते हैं यदि वे दृढ़मति और एकाग्रचित्त हो तो उन्होंने जो कुछ और जैसा भी चाहा था उसे वे प्राप्त कर सकेंगे।

तिरुक्कुरल

स्मृति शेष

मिट गए अगणित लघु दीप हमारे

मिट गए अगणित लघु दीप हमारे,
बिखर गए माला के पुष्प
तब बुझते तारों के नीरव नयनों का यह हाहाकार,
आँसू से लिख लिख जाता है
'कितना अस्थिर है संसार!
जिन अधरों की मन्द हँसी थी,
नव अरुणोदय का उपमान,
किया दैव ने जिन प्राणों का,
केवल सुषमा से निर्माण;
तुहिन बिन्दु सा, मंजु सुमन सा,
जिन का जीवन था सुकुमार,
दिया उन्हें भी निठुर काल ने,
क्रूर मृत्यु का शयनागार।

कोरोना काल की प्रलयंकर लहर ने अनेक स्वजनों, मित्रों, बंधु-बांधवों को हमसे छीन लिया है। देखते–देखते न जाने कितने अपने हमसे बिछड़कर दूर आसमान की गोद में बिखरे तारों में समा गए। कोरोना की इस उत्ताल विकराल लहर ने कल्याण आश्रम के अनेक समर्पित पूर्णकालिक कार्यकताओं को भी निगल लिया। कल्याण आश्रम की दिशा और दशा को तय करने की दोनों ही भूमिकाओं में इन कार्यकर्ताओं ने अपना सर्वस्व लुटा दिया। अनेक विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने कल्याण आश्रम के प्रदीप को अपने त्याग और स्नेह से प्रज्वलित किए रखा। इनके चले जाने से कल्याण आश्रम परिवार शोक संतप्त है।

● इंजीनियर श्री रमेश कुमार जी:- इंजीनियर श्री रमेश कुमार जी के दिनांक 23 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप सेवा समर्पण संस्थान, कानपुर के माननीय अध्यक्ष रहें। आपके कार्यकाल में संस्था का कार्य काफी बढ़ा।

● श्री प्रणय दत्त जी:- श्री प्रणय दत्त जी का दिनांक 30 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप लगभग 35 वर्ष कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक रहे। श्रद्धेय प्रणयदा ने नगरीय क्षेत्र में विशेष कर झारखंड में प्रभावी कार्य खड़ा किया। झारखण्ड के जनजाति समाज के साथ आपका गहरा संबंध रहा है।

● श्री शरद त्रिवेदी जी:- कल्याण आश्रम के राजस्थान प्रांत सह मंत्री श्री शरद त्रिवेदी जी का निधन दिनांक 24 अप्रैल को हुआ। आप लम्बे समय से पूर्ण कालीन कार्यकर्ता रहे। प्रांत के खेलकूद प्रमुख के नाते से भी आपने कार्य किया।

● श्री रामदास गावीत जी:- श्री रामदास गावीत जी के दिनांक 2 जून को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप 35 वर्ष कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक कायकर्ता रहें। आरोग्य रक्षक से कार्य आरंभ करते हुए संगठन के विभिन्न दायित्वों का निर्वाह आपने करते हुए क्षेत्र के हितरक्षा प्रमुख रहें। महाराष्ट्र के पहले श्रेणी के पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं में आपका नाम आता है।

● श्री बापू वर्वे जी:- श्री बापू वर्वे जी का दिनांक 10 अप्रैल को वृद्धावस्था के कारण दुखद निधन हुआ। लगभग 30 वर्ष तक पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में कार्यरत रहें, बापूजी का जीवन समर्पित एवं प्रेरणादायी रहा। वे कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय सह खेलकूद प्रमुख भी रह चुके हैं। मुम्बई महानगर में संपर्क कर कल्याण आश्रम के लिए अनुदान जुटाने का कार्य आपने अपने जीवन के आखिरी कुछ माह पूर्व तक किया।

● श्री लक्ष्मीपत शर्माजी:- श्री लक्ष्मीपत शर्माजी का दिनांक 14 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप ने कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख के नाते कई वर्ष तक कार्य किया। आप की परिश्रमशीलता एवं सादगीपूर्ण जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायी है।

● डॉ. निलेशभाई जी:- डॉ. निलेशभाई जी का दिनांक 17 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप हमारे गुजरात प्रांत के सह आरोग्य प्रमुख रहे है।

● श्री हनुमान नारायण जी:- श्री हनुमान नारायण जी का दिनांक 24 अप्रैल को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आपने लगभग 30 वर्ष वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में मणिपुर, हरियाणा, दिल्ली में कार्य किया। आप अ. भा. प्रचार प्रसार प्रमुख भी रहे।

● श्री शिवाजी शितलगेरा जी:- श्री शिवाजी शितलगेरा का दिनांक 23 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप कल्याण आश्रम कर्नाटक के उपाध्यक्ष रहे है।

● श्री विद्याधर जी:- श्री विद्याधर जी का दिनांक 24 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप पूर्व में हमारे कल्याण आश्रम के दक्षिण क्षेत्र खेलकूद प्रमुख रहे।

● श्री ज्ञान प्रकाश जालान जी:- श्री ज्ञान प्रकाश जालान जी का दिनांक 10 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप वनवासी कल्याण केंद्र के कोषाध्यक्ष थे।

● श्री नंदा बडाईक जी:- श्री नंदा बडाईक जी का दिनांक 10 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप दो दशकों से अधिक समय पूर्ण कालिक कार्यकर्ता रहे। आपने एकल विद्यालय के कार्य को झारखंड में गति प्रदान की। सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी थे नंदाजी।

● श्री जनार्दन सिंह जी:- श्री जनार्दन सिंह जी का दिनांक 14 मई को दुखद निधन हुआ। आप ने लंबे समय तक कल्याण आश्रम के पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में कार्य किया। आप दिल्ली के प्रांत संगठन मंत्री रहे।

● श्री जलदिन्दु दास जी:- नागा राज्य के प्रांत सह संगठन मंत्री श्री देवप्रिय दास जी के पूज्य पिताजी श्री जलदिन्दु दास जी का दिनांक 4 मई को वृद्धावस्था के कारण दुखद निधन हुआ। आपने नागालैण्ड के सुदूर टेनिंग में रहकर वृद्धावस्था में भी नागा समाज को मेडिकल सेवाएँ प्रदान की।

● श्री हृदानंद टोप्पो जी:- श्री हृदानंद टोप्पो जी का दिनांक 6 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप उड़िसा प्रांत के आरोग्य प्रमुख थे। आप लगभग 20 वर्ष से पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय थे।

● श्री वराह मूर्ति:- श्री वराह मूर्ति जी का दिनांक 22 अप्रैल को दुखद निधन हुआ। आप आंध्र प्रांत के शिक्षा प्रमुख रहे।

● श्री खड़कसिंह देशमुख जी:- छत्तीसगढ़ प्रांत के सह हितरक्षा प्रमुख श्री रितेश देशमुख जी के पूज्य पिताजी श्री खड़कसिंह देशमुख जी का दिनांक 24 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ।

श्री रितेश जी कल्याण आश्रम के पूर्ण कालीन कार्यकर्ता हैं।

● श्री हरेकृष्ण गुप्ता जी:- श्री हरेकृष्ण गुप्ता का दिनांक 24 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप कानपुर प्रांत के छात्रावास प्रमुख रहे है।

● श्री अरविंद जी श्रीवास्तव:- श्री अरविंद जी श्रीवास्तव का दिनांक 19 अप्रैल को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप महाकौशल प्रांत के शिक्षा प्रमुख रहे है।

● श्री संजय अरोड़ाजी:- श्री संजय अरोड़ा जी का दिनांक 24 अप्रैल को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप कल्याण आश्रम हरियाणा इकाई के सह कोषाध्यक्ष रहे है।

● श्री नंदकुमार साव जी:- श्री नंदकुमार साव जी का दिनांक 18 अप्रैल को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप ने कई वर्ष तक लोहरदगा के बिरसा नेत्रालय में चिकित्सा सहायक के रूप में सेवाएँ दी है।

● श्री मच्छींद्र शिंदे जी:- श्री मच्छींद्र शिंदे जी का दिनांक 6 मई को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप हमारे कल्याण आश्रम गोवा के पंचवाड़ी छात्रावास प्रमुख थे।

● श्री जगजीत सिंह जी :- श्री जगजीत सिंह जी का दिनांक 9 मई को दु:खद निधन हुआ। आप कल्याण आश्रम प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य रहें। छात्रावास में छात्रों को संस्कार देने का कार्य आपने लंबे समय तक किया।

● श्री रामलाल महतो जी:- श्री रामलाल महतो जी का दिनांक 22 मई को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आपने कल्याण आश्रम जशपुर के विद्यालय में आचार्य के रूप में कई वर्षों तक सेवाएँ प्रदान की।

● श्री सुनील देशपांडे जी:- श्री सुनील देशपांडे जी का 19 मई कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप ने विदर्भ के वनवासी क्षेत्र में बांस की हस्तकला को जन-जन तक पहुंचाया एवं एक पहचान बनाई।

● श्री निर्मल राम भगत जी:- श्री निर्मल राम भगत जी का दिनांक 22 मई को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप धर्मार्थ चिकित्सालय में काफी समय से सक्रिय थे। कोरोना की दूसरी लहर में आपका किया सेवा कार्य सराहनीय रहा।

● श्री गोपाल भगत जी:- श्री गोपाल भगत जी का दिनांक 23 मई को कोरोना के कारण दुखद निधन हुआ। आप कल्याण आश्रम अंडमान इकाई के संस्थापक सदस्य थे।

● सुश्री झरना दास:- सुश्री झरना दास का दिनांक 21 जून को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप विगत 25 वर्षों से कल्याण आश्रम की कायकर्ता रहीं। विभिन्न दायित्वों का निर्वाह करते हुए दक्षिण बंग प्रांत में विभाग महिला प्रमुख के रूप में कार्य कर रहीं थी।

● श्री वेंकटेश मूर्ति जी:- श्री वेंकटेश मूर्ति जी का 26 जून को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में आपने लम्बे समय तक काम किया।

● श्रीमती खम्बलाई जी:- अरूणांचल प्रदेश प्रांत के श्रद्धा जागरण प्रमुख श्री अमोसो खम्बलाई जी की पूज्य माताजी श्रीमती खम्बलाई जी का दिनांक 15 जुलाई को दु:खद निधन हुआ।

● श्री गोविन्द सिंह मरावी जी:- कल्याण आश्रम महा कौशल प्रांत के अध्यक्ष रह चुके श्री गोविन्द सिंह मरावी जी की पत्नी का 10 मार्च को दु:खद निधन हुआ।

● श्री राम प्रसाद आर्य जी:- कल्याण आश्रम के मध्य भारत इकाई के भूतपूर्व संगठन मंत्री श्री राम प्रसाद आर्य का निधन हो गया।

● श्रीमती गायत्री गुप्ता जी:- कल्याण आश्रम झारखण्ड प्रांत के सह मंत्री श्री आलोक गुप्ता जी की पूज्य माताजी श्रीमती गायत्री गुप्ता का कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्री सीताराम शर्मा जी:- कल्याण आश्रम झारखण्ड प्रांत के लोहरदगा केन्द्र के संरक्षक श्री सीताराम जी का 12 अप्रैल को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्री अमित कुमार गुप्ता जी:- झारखण्ड प्रांत के कोषाध्यक्ष श्री अमर गुप्ता जी के पुत्र श्री अमित गुप्ता जी का दिनांक 7 अप्रैल 2021 को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्री अनिल कुमार गुप्ता जी:- झारखण्ड प्रांत के कोषाध्यक्ष श्री अमर गुप्ता जी के भाई श्री अनिल कुमार गुप्ता जी का कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्रीमती कल्याणी अग्रवाल जी:- कल्याण आश्रम धनबाद में आमंत्रित सदस्य श्री प्रदीप अग्रवाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती कल्याणी अग्रवाल जी का कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्री श्याम सुन्दर चौधरी जी:- श्री श्याम सुन्दर चैधरी जी का कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ। आप झारखण्ड प्रांत के प्रांतीय कार्यकारिणी के आमंत्रित सदस्य रहे हैं।

● श्री सीताराम पोद्दार जी:- रांची महानगर समिति के सक्रिय सदस्य श्री सीताराम पोद्दार जी का 21 अप्रैल को कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्रीमती इलीसबा देवी जी:- कल्याण आश्रम के पूर्णकालीन कार्यकर्ता एवं लोहरदगा प्रकल्प प्रमुख श्री राम जी उरांव की धर्मपत्नी श्रीमती इलीसबा देवी जी का दिनांक 16 मई 2021 में कोरोना के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्रीमती शिवकुमारी जी:- प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य श्री राम जी बाबू भभुआ, बिहार के धर्म पत्नी जी का स्वर्गवास 11 मई 2021 को हुआ।

● श्री देवकुमार जी:- श्री देवकुमार जी का स्वास्थ्य खराब होने के कारण दु:खद निधन हुआ।

● श्री देवमोहन प्रसाद सिंह जी की धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब होने के कारण दु:खद निधन हुआ।

● कल्याण आश्रम मध्य क्षेत्र के श्रद्धाजागरण प्रमुख श्री गोविन्द रजक की पूज्य माताजी का दिनांक 18 जुलाई को दु:खद निधन हुआ।

● कोलकाता महानगर की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला बागड़ी की माताजी श्रीमती बरजी देवी मूंदड़ा एवं सासु माँ श्रीमती कमला देवी बागड़ी का वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया। उनकी पुत्री वर्षा लखानी भी कोरोना के कारण असमय काल कवलित हो गयी।

● पूर्वांचल कल्याण आश्रम दक्षणि बंग प्रांत के कार्यकारिणी सदस्य एवं एवं हावड़ा महानगर के सह संगठन मंत्री श्री मनोज अग्रवाल जी के पिताश्री जीतमल जी अग्रवाल का कोरोना के कारण दुखद निधन हो गया।

कल्याण आश्रम परिवार सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है। उनकी आत्मा को ईश्वर शांति प्रदान करे एवं परिजनों को धैर्य प्रदान करें।

नींद भी खुली न थी कि हाय धूप ढल गयी।
पाँव जब तलक उठें कि जिन्दगी फिसल गयी।।
पात-पात झर गए कि शाख-शाख जल गयी।
चाह तो सकी निकल न, पर उमर निकल गयी।।
और हम झुके-झुके मोड़ पर रूके-रूके।
उम्र के चढाव का उतार देखते रहे।।
कारवॉ गुज़र गया गुबार देखते रहे।। ■

ग्रामसभा के जरिए होगा वनों का प्रबंधन

वन अधिकार से जुड़ा संयुक्त पत्रक जारी करते (बाएं से) प्रकाश जावड़ेकर, अर्जुन मुंडा और अन□य

बनांचल में रहने वाले जनजाति समाज को वनों पर अधिकार देने के लिए केंद्र सरकार ने ऐतिहासिक पहल की है। गत छह जुलाईं को केंद्रीय जनजाति कार्य मंत्री अर्जुन मुंडा एवं निवर्तमान केंद्रीय वन पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने वन अधिकार से जुड़ा संयुक्त पत्रक जारी किया। इसके जरिए ग्राम सभा को वनों के प्रबंधन का अधिकार दिए जाने की राह को आसान बनाया गया है। इसका प्रमुख उद्देश्य वन अधिकार कानून के तहत सामुदायिक वन संसाधनों का अधिकार ग्राम सभा को दिया जाना। वनवासी कल्याण आश्रम और जनजाति समाज यह मांग कई वर्षों से कर रहा है। वनवासी कल्याण आश्रम ने सरकार की इस पहल का स्वागत किया है। संगठन ने भरोसा जताया है कि राज्यों में इसके क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियों का भी संयुक्त रूप से दोनों मंत्रालय समाधान करेंगे। इससे पहले अर्जुन मुंडा ने कहा था कि आगामी दो वर्ष में सामुदायिक वनों पर अधिकार देने का कार्य अभियान चलाकर पूरा किया जाएगा। ऐसे में जनजाति एवं वन मंत्रालय की इस साझा पहल को बड़ा कदम माना जा रहा है। इस कानून को क्रियान्वित करने का कार्य जनजाति विभाग का है, जो इसका नोडल विभाग है। केंद्रीय जनजाति मंत्रालय ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को इस संबंध में समय-समय पर दिशानिर्देश भी जारी किए हैं।

वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा जनजाति समाज के जन प्रतिनिधियों और युवाओं से इस विषय में जनजागरण का आह्वान किया गया है। इससे एक ओर जहाँ वन और जैव विविधता की रक्षा होगी, वहीं जनजातियों की आजीविका सुरक्षित होगी। कल्याण आश्रम ने राज्य सरकारों से ग्राम सभा को मजबूत बनाते हुए तकनीकी एवं वित्तीय सहयोग की भी मांग की है। ■

निष्ठा और समर्पण के प्रतिमान सत्यनारायण केजरीवाल

शैलजा बियानी
सेवा पात्र प्रमुख
साल्टलेक समिति

अत्यंत सीधे, सरल, गंभीर और धैर्यवान व्यक्ति थे कोलकाता-हावड़ा महानगर संभाग प्रमुख श्री सत्यनारायणजी केजरीवाल। 20 May 2021 को ऐसी अद्भुत शख्सियत का परलोक गमन उनके परिवार, मित्रगण, सामाजिक संस्थाओं तथा संपूर्ण कल्याण आश्रम परिवार को अनाथ कर गया।

उनके बारे में जो भी कहा जाये बहुत ही कम है। वे पिछले 32 वर्षों से कल्याण आश्रम के कार्यों से जुड़े थे। साल्टलेक पुरुष समिति को मजबूती से बाँधे रखने के अलावा वे महानगर की गतिविधियों में भी सक्रिय रहे। धीरे-धीरे प्रांतीय स्तर पर भी उनकी सहभागिता बढ़ती चली गई। पुरुलिया की अयोध्या पहाड़ी के सुगनाडीह गाँव में उन्होंने प्रथम जलाशय वहाँ के पूर्णकालीन कार्यकर्ता तथा ग्रामवासियों की मदद से बनवाया। तत्पश्चात जलाशय का कार्य संपूर्ण पश्चिम बंगाल प्रांत में हर वर्ष बढ़ता चला गया। खड़गपुर क्षेत्र के कल्याण आश्रम की ग्राम विकास योजनाओं में भी वे प्रयासरत रहे।

गोसाबा कन्या छात्रावास का आज हम जो संपूर्ण स्वरूप देख रहे है यह उनके अनथक, निरंतर प्रयास और श्रम का नतीजा है। अड़चने और रुकावटें बहुत आई, परंतु हर रविवार को सुदूर सुंदरवन क्षेत्र में जाकर, छात्रावास के कार्य को अपनी बुद्धिमता और विचार कुशलता से आगे बढ़ाया।

मैंने उनके साथ 4 वनयात्रायें की है। वे जिस तरह से वहाँ के माहौल में वनवासी भाईयों के संग घुल-मिल जाते थे, वह छवि भुलाये नहीं भूलती।

कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय कार्यकर्ता, पूर्णकालीन कार्यकर्ता, महिला-पुरुष सभी से वे अति स्नेह करते थे।

वे हरेक से वार्तालाप करने, उनके कार्य की जानकारी लेने, उनकी तकलीफ के बारे में पूछते। यह उनकी खासियत थी कि वे सोते-जागते केवल कल्याण आश्रम का चिंतन करते। समय और पैसा इसके आगे गौण थे। हर परिस्थिति में मुस्कुराते रहने वाले, कभी ना उत्तेजित होने वाले श्री केजरीवालजी का यूँ चले जाना अविश्वसनीय है। भागवत कथा आयोजनों को विराट स्वरूप देने वाले इस महान हस्ती का परम कृपालु विष्णु के विराट स्वरूप में यूँ समाहित होना संपूर्ण वनवासी समाज के लिये बहुत ही कष्टमयी विकट परिस्थिति है।

'तू-मैं- एक रक्त' के भाव को सही मायने में समझने वाले श्री सत्यनारायणजी केजरीवाल को हमारा शत् शत् नमन! ■

कोलकाता-हावड़ा महानगर की गतिविधियाँ

मनोज अग्रवाल, हावड़ा महानगर, सह संगठन मंत्री
शशि अग्रवाल, कोलकाता महानगर, महिला संगठन मंत्री

दूर कहीं कोई नहीं,
केवल समर्पण चाहिए।
कुछ कर गुजरने के लिए,
मौसम नहीं मन चाहिए।।

गीतऋषि रमानाथ अवस्थी की ये ओजस्वी पंक्तियाँ पूर्वांचल कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं पर पूरी तरह चरितार्थ होती है।

कोरोना वैश्विक महामारी ने पूरे विश्व को स्तब्ध कर दिया। किंकर्तव्यविमूढ़ बना दिया। पूरा संसार जैसे ठहर सा गया। चारों तरफ अंधकार ही अंधकार। लोगों से अपने असमय ही बिछुड़ गए। अपनों को अंतिम विदाई तक न दे पाने की पीड़ा कभी भी कम न होगी। ऐसे संकटकाल में भी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता टूटे नहीं। समाज सचेतन रहे, इसके लिए सतत प्रयत्नशील बने रहे। इस हेतु अनेक गतिविधियों का आयोजन निरंतर होता रहा। 2020-21 में कल्याण आश्रम की गतिविधियों का संक्षिप्त वृत्त यहाँ प्रस्तुत है ।

दिनांक 17 अप्रैल 2020 को श्रीमद्भगवद्गीता के 12वें अध्याय पर परिचर्चा का आयोजन हुआ। इस आध्यात्मिक आयोजन का संचालन श्रीमती स्नेहलता बैद द्वारा किया गया।

20 अप्रैल 2020 को कोलकाता–हावड़ा समिति ने वेबिनार का प्रकल्प लिया। इस आभासी आयोजन को संबोधित किया, अखिल भारतीय संगठन मंत्री श्री अतुल जी जोग ने।

16 जून 2020 को मोहन जी गर्ग के नेतृत्व में मुंबई में अपने छात्रावास को लौट रहे नागालैंड के छात्रों के लिए बैठक और दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गई।

28 जून 2020 को विचार गोष्ठी के आयोजन का संकल्प हुआ। जिसका विषय था वनयोगी बालासाहेब देशपांडे की जीवन और प्रतिकूल परिस्थिति में कल्याण आश्रम का कार्य स्थापन।

12 जुलाई 2020 को सभी कार्यकर्ताओं को आभासी बैठक द्वारा जोड़ा गया जिसमें श्री अतुल जी जोग ने अतिथि वक्ता के रूप में सभी को संबोधित किया।

19 जुलाई 2020 को अखिल भारतीय छात्रावास प्रमुख श्री महितोष गोल की श्रद्धांजलि सभा हुई, जिसमें उन्हें भावभीनी शब्दांजलि दी गई।

26 जुलाई 2020 को अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के प्राक्तन अध्यक्ष श्री जगदेव राम जी उरांव के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ। अश्रुपूरित श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

4 अगस्त 2020 को पूर्वांचल कल्याण आश्रम और भारतीय संस्कृति संवर्धन समिति का संयुक्त कार्यक्रम हुआ, जिसमें राम जन्म भूमि मंदिर के शिलान्यास की पूर्व संध्या पर "राम मंदिर

निर्माण-राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष" विषय पर बाबा सत्यनारायण मौर्य का मार्गदर्शन हुआ।

15 अगस्त 2020 पूर्वांचल कल्याण आश्रम की सभी समितियों द्वारा देशभक्ति और रामभक्ति के गीत प्रस्तुत किये गए।

21 अगस्त 2020 प्रांतीय अध्यक्ष स्वर्गीय विश्वनाथ बिस्वास के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ।

17 सितंबर 2020 माननीय वसंत राव जी भट्ट के जीवन पर आधारित पुस्तक का विमोचन हुआ।

पुरुषोत्तम मास के आगमन के साथ ही कल्याण आश्रम के कार्यकर्तागण आध्यात्मिक आयोजन को संपन्न कराने में जुट गए। जिसका विवरण इस प्रकार है-

प्रथम सत्र: 26–27 सितम्बर 2020पुरुषोत्तम मास का माहात्म्य और प्रभु श्रीराम की महिमा पर पूज्या विजया जी उर्मलिया का आध्यात्मिक व्याख्यान आभासी आयोजन के माध्यम से संपन्न हुआ।

द्वितीय सत्र: 10 से 11 अक्टूबर 2020 को पंचखंड पीठाधीश्वर **आचार्य श्री धर्मेन्द्र जी महाराज** जी ने मानवता के मूर्त रूप श्री राम पर अपना दिव्य व्याख्यान दिया।

तृतीय सत्र: 16 अक्टूबर 2020 को पुन: पूज्या **विजया जी उर्मलिया** का स्नेहभाजन बनने का सौभाग्य कल्याण आश्रम के कार्यकर्त्ताओं को प्राप्त हुआ। विजया जी ने कल्याण आश्रम के आभासी मंच से नवरात्रि का सांस्कृतिक महत्त्व और हमारे जीवन में उसकी भूमिका विषय पर हम सबका आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया।

चतुर्थ सत्र: 24 अक्टूबर 2020 को **श्री गुणवंत सिंह जी कोठारी** ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदू जीवन दृष्टि पर अपने सारगर्भित विचारमाला से हम सभी को हिंदुत्व की वैज्ञानिकता, प्रासंगिकता और माहात्म्य से सबको अवगत कराया।

पंचम सत्र: 6 नवम्बर 2020 को **पूज्या विजया जी उर्मलिया** ने सांस्कृतिक पर्व दीपावली सामाजिक एकता और समरसता का पर्व है विषय पर अपनी दिव्य वाणी से हम सभी के मन के अँधेरे को दूर करने का सात्विक प्रयास किया।

षष्ठ सत्र: 6 नवम्बर 2020 माननीय **मेजर सुरेंद्र माथुर** के दिव्य वचनों से आभामय बना। आपने सनातन संस्कृति का प्रभाव और वर्तमान स्थिति पर तथ्यपूर्ण और तार्किक मार्गदर्शन किया।

6 दिसंबर 2020 को गणेश पूजन का अलौकिक आयोजन हुआ।

4 जनवरी 2021 को **श्रीमती मंजू जी पचीसिया** ने महिला कार्यकर्ताओं हेतु ओम शांति ओम गंगा व्याख्यान दिया।

21 फरवरी 2021 को कामधेनु गोशाला, सोदपुर में परिवार मिलन और वनभोज का उत्साहवर्धक कार्यक्रम संपन्न हुआ।

8 मार्च अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर श्रीमती इंदु जी नथानी को भारत चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा एक्सेप्शनल एंड एक्सट्राऑर्डिनरी अचीवर अवार्ड से सम्मानित किया गया।

21 मार्च: कोलकाता की सुप्रसिद्ध समाजसेवी संस्था विचार मंच ने हमारे कर्मठ कार्यकर्ता **श्री निर्मल अग्रवाल** को ग्राम्य सेवा के लिए सम्मानित किया।

28/29/30 मई को अहम् राम: अस्मि मैं राम हूँ कार्यक्रम का आभासी आयोजन हुआ। जिसमें 175 लोगों ने भाग लिया। वक्ता थे पूज्य स्वामी श्री गोविंद देव गिरि जी महाराज, पूज्या दीदी माँ साध्वी

ऋतम्भरा जी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह सरकार्यवाह माननीय श्री कृष्ण जी गोपाल जी। 32 अन्य संगठनों के साथ संयुक्त रूप से आयोजित इसे फेसबुक पर करीब 1.5 लाख लोगों ने देखा और लगभग 50,000 से अधिक लोगों ने इसे विभिन्न अन्य सोशल मीडिया पर देखा।

21 जून 2021 को अंतराष्ट्रीय योग दिवस पर पूर्वांचल कल्याण आश्रम (कोलकाता–हावड़ा) द्वारा योग दिवस मनाया गया, जिसमें "स्वास्थ्य के प्रति सजग" मंत्र को जीवन का मंत्र स्थापित करती हुई योगसन विशेषज्ञा आदरणीया **मालिनी अग्रवाल** द्वारा लाभदायक आसनों का प्रदर्शन किया गया।

22 जून 2021 को कल्याण आश्रम के आभासी मंच से बंगाल की वर्तमान परिस्थिति पर रोंगटे खड़ा कर देने वाला अपना क्रांतिकारी उद्बोधन प्रस्तुत किया भाजपा की मीडिया प्रभारी एवं जुझारू कार्यकर्ता **श्रीमती केया घोष ने**।

8 जुलाई 2021 को **डॉ. मधुस्मिता बेहरा**, नेत्र शल्य चिकित्सा विशेषज्ञा ने कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं के लिए "आधुनिक युग में आँखों की सुरक्षा" पर लाभदायक व्याख्यान दिया।

इसी श्रृंखला में **डॉ. योगिनी बापट** ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के विभिन्न तरीकों से हमें अवगत कराया।

24 जुलाई 2021 को गुरु पूर्णिमा और श्रावणी उत्सव के पावन पर्व पर पूज्या विजया जी उर्मलिया ने भगवान भूत–भावन का स्मरण कराते हुए दिव्य सत्संग के आभासी आयोजन को अलौकिक गरिमा प्रदान की। गुरु शब्द की सटीक व्याख्या करते हुए विजया जी ने कहा कि जो भी व्यक्ति कृपा करे, वही गुरु है। गुरुपूजा के माध्यम से हम उनके अंदर विराज रहे ईश्वरत्व की पूजा करते हैं। अपने आत्मीय संबोधन से विजया जी ने सीता जी के गौरी पूजन और रघुनाथ दर्शन की अलौकिक अनुभूति कराई। सीता जी, उनकी सखी, लक्ष्मण जी और श्रीराम के आध्यात्मिक स्वरूप को कार्यकर्ताओं के निर्मल मन में स्थापित किया। विजया जी ने कहा कि इस प्रसंग में राम परमात्मा हैं, सीता जी जीवात्मा हैं, लता माया है और सखी गुरु की भूमिका में है। स्वामी विवेकानंद जी के माध्यम से स्पष्ट किया कि जीव और साधना का अभिन्न संबंध है। साधकत्व से ही योग्यता विकसित होती है। जीव में अभिमान न आने पाए, ऐसा ही ईश्वर चाहते हैं। जीव का जग जाना ही सबसे बड़ा उत्सव है। श्रावणी उत्सव संयम और धैर्य का उत्सव है। सामाजिक एकत्व बढ़ाने का पर्व है। प्रार्थनाओं को बढ़ाने का त्योहार है। हमारी सनातन परंपराएँ वैज्ञानिक हैं। इनको पुनर्जीवित करना जरूरी है। योग एवं सूर्य नमस्कार के माध्यम से हमारी वेगस तंत्रिकायें जागृत होती है। जब हम संस्कृत मंत्रों को सुनते हैं, उसकी ध्वनियाँ हमारे वेगस नर्व पर सीधा प्रभाव डालती है। मंत्रों का जाप करने से शरीर की प्रक्रिया सुधरने लगती हैं। संस्कृत मंत्रों का उच्चारण एवं वेगस नर्व को जागृत करना ही उत्सव है। श्रावणी उत्सव में भगवान भोलेनाथ का पूजन होता है। भगवान को अपने से जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है– मंत्र–जाप। विजया जी ने कहा कि हमारे सारे उत्सव वैज्ञानिक है। भोलेनाथ की नृत्य शैली को भगवान से जोड़ने का अद्भुत माध्यम बताया। पूज्या संत ने भगवद- संकीर्तन के साथ अपने आध्यात्मिक संबोधन को पूर्णता प्रदान की। सारांशत: कह सकते हैं कि कोरोना के कठिन कालखंड में भी कार्यकर्ता रुके नहीं, ठहरे नहीं अपितु साधक की मनोभूमिका से निरंतर कार्यरत रहें। ■

अखिल भारतीय महिला प्रमुख
सुश्री वीणापाणि दास शर्मा
नारी रत्न सम्मान से सम्मानित

गत 12 मई 2021 को वनवासी कल्याण आश्रम की अखिल भारतीय महिला प्रमुख सुश्री वीणापाणि दास शर्मा को **मैं भारत हूं संघ** द्वारा नारी रत्न सम्मान से आभासी माध्यम द्वारा आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया। आभासी पटल के माध्यम से जुड़े अनेक व्यक्तियों तक वनवासी सेवा कार्यों की प्रासंगिकता एवं महत्व की जानकारी पहुंची। वीणा दीदी ने विस्तार से कल्याण आश्रम के कार्यों के परिणाम स्वरूप वनवासी क्षेत्रों में आए परिवर्तन के बारे में श्रोताओं को बताया। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे कार्यकर्ता किस प्रकार अभावों एवं विपरीत परिस्थितियों में भी दृढ निष्ठा के साथ कार्य में जुटे हुए हैं। आदरणीय वीणा दी का सम्मान वस्तुत: कल्याण आश्रम का एवं संगठन से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं का सम्मान है। पूरा कल्याण आश्रम परिवार वीणा दीदी का उनके उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिए अभिनंदन करता है। ■

अनुकरणीय

अनुकरणीय बने बसुधा में शुभ आचरण तुम्हारा!

जिस समय त्याग की सभ्यता संसार में आती है उस समय नीले आकाश से मनुष्य को वेद-ध्वनि सुनायी देती है, नर-नारी पुष्पवत् खिलते जाते हैं, प्रभात हो जाता है, प्रभात का गजर बज जाता है, नारद जी वीणा अलापने लगते हैं, ध्रुव का शंख गूँज उठता है, प्रह्लाद का नृत्य होता है, शिव का डमरू बजता है, कृष्ण की बाँसुरी की धुन प्रारंभ हो जाती। विद्या, कला, कविता, साहित्य, धन और राजस्व से भी दान का आचरण अधिक ज्योतिष्मान है। इस तरह के आचरण की भाषा सदा मौन रहती है। हमारे वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री अंबिका प्रसाद जी भूत के जमाई एवं पुत्री (भरत साह एवं डॉली साह) ने अपनी बेटी रेवा के विवाह उपलक्ष पर अपने शिव संकल्प को मूर्त रूप प्रदान करते हुए परिणय के मांगलिक आयोजन पर वनवासी ग्राम के उत्थान हेतु वर्षा जल संग्रहण हेतु तालाब निर्माण के लिए 31000/- की धनराशि समर्पित की। इसी क्रम में बनारस से श्रीमती बिमला देवी गनेरीवाल ने तालाब निर्माण हेतु 31000/- की राशि हमारे कार्यालय में भेजी हैं।

कल्याण आश्रम दोनों परिवारों का इस पवित्र स्नेह का भाजन बनने के लिए सदा ही आभारी रहेगा।

मंगलमय हो संस्कृति-पथ पर अगला चरण तुम्हारा! ■

स्वाधीनता के अमृत महोत्सव पर **हमारे जगदेव राम जी** चित्र पुस्तिका का विमोचन

उत्तम महतो, संगठन मंत्री
पू.क.आ., दक्षिण बंग प्रांत

जो सैनिक सीमा रेखा पर ध्रुव तारा बन जाता है,
उस कुर्बानी के दीपक से सूरज भी शरमाता है।
गरम दहानो पर तोपो के जो सीने आ जाते है,
उनकी गाथा लिखने को अम्बर छोटे पड़ जाते है।।

हरिओम पवार जी की ये पंक्तियाँ हृदय में बरबस उतर आती हैं जब–जब अमर निष्ठा और समर्पण की मूर्ति अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के द्वितीय अध्यक्ष स्वर्गीय जगदेव राम जी उरांव स्मृतियों में आते हैं। उनकी प्रथम पुण्यतिथि पर भारत के अनेकानेक शहरों और गाँवों में जगदेव राम जी के जीवन पर आधारित चित्र–पुस्तिका का विमोचन संपन्न हुआ। पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता के कल्याण भवन में एवं आभासी माध्यम से दिनांक 15 अगस्त को प्रात: 11 बजे डॉ. चूनाराम मुर्मू (प्रांतीय अध्यक्ष) के करकमलों से चित्र–पुस्तिका का विमोचन कार्यक्रम संपन्न हुआ।

चित्र पुस्तिका के माध्यम से जगदेव जी हम सबके बीच फिर हँसने-मुसकराने लगे।

हमारे जगदेव राम जी के महत् व्यक्तित्व और समर्पित कृतित्व पर आधारित यह चित्र पुस्तिका कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता भगिनि –बंधुओं को चिरकाल तक प्रेरित करती रहेगी। आजादी के अमृत महोत्सव पर अपने इस ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता को स्मरण करना अपने मन-वचन-कर्म को अमृतमय करना है।

चित्र–पुस्तिका के अनावरण के पावन अवसर पर श्रीमती शैलजा जी ने अपने प्रेरक गीत से वातावरण को संगीतमय बना दिया।

अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष माननीय शंकर दा ने अपने उद्बोधन में जगदेव जी को याद करते हुए उनके जीवन के अविस्मरणीय पलों को सभी के साथ साझा किया। वनवासी कल्याण आश्रम को जन–जन तक पहुँचाने में जगदेव राम जी के उल्लेखनीय प्रयासों को याद किया। जगदेव जी के कलकत्ते के सम्मान समारोह को याद करते हुए आदरणीय शंकर जी ने जगदेव जी की विनम्रता और सदाशयता के पलों को सबके साथ बाँटा।

इस अवसर पर **'वीर चुरका मुर्मू और जनजाति समाज'** बंगला पुस्तिका का विमोचन भी माननीय श्री अद्वैत चरण दत्ता (अखिल भारतीय सह प्रचारक प्रमुख, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) के कर कमलों से हुआ। ■

बोध कथा

वाणी का संयम

द्वापर युग समाप्ति की ओर था। महाभारत को बोलकर लिखवाने के लिए महर्षि वेदव्यास जी के मन में किसी योग्य व्यक्ति की कामना जागृत हुई। उनकी इस कामना को पूर्ण करने के लिए गणेश जी ने महाभारत लिखने का संकल्प ले लिया। महर्षि वेदव्यास जी बोलते गए तथा गणेश जी लिखते गए। बहुत दिनों तक यह कार्य चलता रहा। महाभारत का लेखन कार्य पूर्ण हुआ तो वेदव्यास जी ने गणेश जी से पूछा, 'महाभाग! मैंने 24 लाख शब्द बोलकर आपको लिखाए हैं, आश्चर्य है कि इस बीच आप एक भी शब्द नहीं बोले। सर्वथा मौन ही रहे। बस लिखते गए।'

तब गणेश जी ने सहज भाव से उत्तर दिया, 'बादरायण, बड़े कार्य संपन्न करने के लिए शक्ति चाहिए और शक्ति का आधार संयम है। संयम ही समस्त सिद्धियों का प्रदाता है। यदि मैं वाणी का संयम न रख सका होता तो आपका ग्रंथ कैसे पूरा हो पाता? संयम से ही तो सभी कार्य सम्पन्न होते हैं।

प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवन में कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है लेकिन जो उन्हें सहज रूप से स्वीकार कर संयम से रहते हुए उनका सामना करते हैं, वे उसे जीतकर आनंद का अनुभव करते हैं।

जो मनुष्य अपनी वाणी और जिह्वा पर नियंत्रण कर पाने में सक्षम होते हैं, वे तन और मन से प्रसन्न व स्वस्थ तो रहते ही हैं, साथ ही वे अपने मंजिल को भी सहज में ही पा लेते हैं। वाणी पर संयम करने वाले मनुष्य असाधारण प्रतिभा के धनी होते हैं। वे मानव समाज के प्रेरणास्रोत होते हैं। वे किसी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाते हैं। साथ ही अनगिन मानवीय गुणों से सम्पन्न भी होते हैं। हम भी संयम से रहने का संकल्प लें, जीवन अमूल्य है। ■

कविता

राम-तत्व तो बोधगम्य है

सुनीता जैन

राम-कथा का वाचन तब कुछ
सीमित सा हो जाता है,
बस इक मानव में जब उसका
ध्रुवीकरण हो जाता है।

राम-तत्व तो बोधगम्य है
शब्दों में आख्यान कहाँ,
भाव भरी छोटी सी बूँद ये
सागर सिमटा हुआ यहाँ।

राम-तत्व में पुरुषार्थ का
है असीम शौर्यत्व भरा,
ज्ञाता-दृष्टा राम-तत्व में
झलक रही संपूर्ण धरा।

मंदिर कहे जिसे तूँ चेतन
वह तेरे मन का दर है,
मन-मंदिर में राम-तत्व है
बाहर मरीचिका भर है।

बसे स्वयं में कस्तूरी धन
भटक रहा क्यों मृग-चेतन,
राम तत्व हैं घट-घट वासी
निज में ढूँढ़ उन्हें चेतन।

राम तत्व का चिंतन-मंथन
युगों-युगों तक चला चले,
आदि-अंत से रहित तत्व यह
सदा ध्यान के मध्य रहे।

■

स्मृतियों के वातायन से कर्मयोगी जगदेव राम जी

राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद के साथ

पूर्व राष्ट्रपति श्री के. आर. नारायणन के साथ

पूर्व राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल के साथ

राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री भैरों सिंह शेखावत के साथ

पर- कल्याण के परम भाव से, कर्मयोगी सम रहते थे।
अत: राष्ट्र के अधिपति भी, आदर भाव से तकते थे।।

(हमारे जगदेव राम चित्र पुस्तिका से साभार)

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post